Indian Council of
Social Science Research

SOUVENIR स्मारिका

दो दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

15-16 अक्टूबर, 2019

महात्मा गाँधी के विचारों के सदंर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा

आयोजक

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सुश्री अनुसुईया उइके
राज्यपाल छत्तीसगढ़

सत्यमेव जयते

राजभवन
रायपुर - 492001
छत्तीसगढ़
भारत
फोन : +91-771-2331100
फोन : +91-771-2331105
फैक्स : +91-771-2331108

क्र./283/पीआरओ/रास/19
रायपुर, दिनांक 10 अक्टूबर 2019

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पण्डित सुन्दर लाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़ बिलासपुर द्वारा **"महात्मा गांधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा"** विषय पर दिनांक 15 अक्टूबर से 16 अक्टूबर 2019 तक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि यह राष्ट्रीय संगोष्ठी अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगा। साथ ही स्मारिका प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(अनुसुईया उइके)

डॉ. चरणदास महंत
Dr. CHARANDAS MAHANT

अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ विधानसभा
SPEAKER, CHHATTISGARH
LEGISLATIVE ASSEMBLY

अर्द्ध शास. पत्र क्र. 264 /अ.वि.स./19
रायपुर, दिनांक 10/10/2019

शुभकामना संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि **पण्डित सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर** द्वारा **15** एवं **16 अक्टूबर 2019** को **"भारतीय सामाजिक विज्ञान की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा"** विषय पर **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** आयोजित की जा रही है।

समसामयिक विषय पर गंभीर अध्ययन अनुसंधान और शोध ही विषय की महत्ता को परिभाषित करता है, मुझे यह पूर्ण विश्वास है कि इस **दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी** में हुई चर्चा से प्राप्त निष्कर्ष भविष्य के लिए मार्गदर्शी होंगे।

अवसर विशेष पर स्मारिका का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है, कामना करता हूँ, आप सबके समन्वित प्रयासों से यह आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न हो।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित

(डॉ. चरणदास महंत)

Prof. G.D. Sharma
Vice-Chancellor
ATAL BIHARI VAJPAYEE VISHWAVIDYALAYA
Bilaspur (C.G.) 495001
Former Vice-Chancellor, Nagaland University (Central) &
Former Pro-Vice-Chancellor, Assam University (Central)

प्रो. जी. डी. शर्मा
कुलपति
अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.) 495001
पूर्व कुलपति, नागालैण्ड विश्वविद्यालय (केन्द्रीय) एवं
पूर्व सह-कुलपति असम विश्वविद्यालय (केन्द्रीय)

क्रमांक 2413/नि.स./2019 बिलासपुर, दिनांक 05/10/2019

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि प्रदेश के न्यायधानी बिलासपुर शहर में स्थित पण्डित सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर छ.ग. द्वारा विषय ''महात्मा गांधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा'' पर दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन एवं शोध संक्षेपिका का प्रकाशन किया जा रहा है जो कि एक सराहनीय प्रयास है।

मैं, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय के प्राध्यापकगण, कर्मचारीगण द्वारा किये जा रहे प्रयास की हृदय से सराहना करता हूँ । राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में प्रकाशित होने वाली संक्षेपिका के माध्यम से राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्य–अहिंसा के मार्ग को विशेष रूप से युवा वर्ग, प्रौढ़ वर्ग को निकटता से जानने का अवसर प्राप्त होगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशित स्मारिका समाज के सभी वर्गो के लिये उपयोगी एवं संग्रहणीय होगी।

दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी ''महात्मा गांधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा'' पर आधारित शोध संक्षेपिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी और अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय परिवार की तरफ से विश्वविद्यालय एवं आयोजक समिति को हार्दिक शुभकामनायें एवं बधाई ।

शुभकामनाओं सहित.....

G. D. Sharma

(प्रो. जी. डी. शर्मा)
कुलपति

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh

डॉ. बंश गोपाल सिंह
कुलपति

Dr. Bansh Gopal Singh
Vice-Chancellor

क्रं. 162 /कु.स./19

बिलासपुर, दिनांक 04/10/2019

// संदेश //

यह प्रसन्नता का विषय है कि पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर के द्वारा "**महात्मा गाँधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा**" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी अक्टूबर 15–16, 2019 को आयोजित किया जा रहा है।

गांधी जी के विचार राष्ट्रगौरव की गाथा के रूप में समाहित हैं। महात्मा गांधी जी को राष्ट्रपिता कहे जाने के पीछे उनके भेदभाव रहित तथा आध्यात्म आधारित समदर्शी दृष्टिकोण एवं मानवतावाद से प्रेरित विचारों और सुकर्मों का योगदान रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि इस संगोष्ठी में महात्मा गाँधी जी के विचारों के समस्त पहलूओं पर चर्चा होगी एवं सार्थक निष्कर्ष प्राप्त होगा जिससे भविष्य में महात्मा गॉधी के विचारों को प्रचारित एवं प्रसारित करने में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले स्मारिका के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

4.10.19

(बंश गोपाल सिंह)
कुलपति

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh

डॉ. इन्दु अनंत
कुलसचिव

Dr. Indu Anant
Registrar

क्र. 211 /कु.का./19

बिलासपुर, दिनांक 04/10/2019

// संदेश //

यह प्रसन्नता का विषय है कि पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर के द्वारा **"महात्मा गाँधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा"** विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी अक्टूबर 15–16, 2019 को आयोजित किया जा रहा है।

गांधी जी के विचार राष्ट्रगौरव की गाथा के रूप में समाहित हैं। महात्मा गांधी जी को राष्ट्रपिता कहे जाने के पीछे उनके समदर्शी दृष्टिकोण एवं मानवतावाद से प्रेरित विचारों और सुकर्मों का योगदान रहा है।

मैं आशा करती हूँ कि इस संगोष्ठी में महात्मा गाँधी जी के विचारों के समस्त पहलूओं पर चर्चा होगी एवं सार्थक निष्कर्ष प्राप्त होगा जिससे भविष्य में महात्मा गॉधी के विचारों को प्रचारित एवं प्रसारित करने में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन एवं इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले स्मारिका के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. इंदु अनंत)
कुलसचिव

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़
बिलासपुर

डॉ. अनिता सिंह
संयोजक

डॉ. प्रीती रानी मिश्रा
सह-संयोजक

डॉ. दीपक पाण्डेय
आयोजन सचिव

संयोजक की कलम से

विश्वविद्यालय परिवार द्वारा एक प्रमुख एवं चिंतनीय विषय पर गहन विचार विमर्श के लिए राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है, जिसमे समाज से जुड़े सभी वर्ग शिक्षक, प्राध्यापक, सामाजिक कार्यकर्ता, शोधार्थी, समाजशास्त्री, राजनीति शास्त्रीयों की सहभागिता अपेक्षित है।

महात्मा गाँधी बहुमुखी प्रतिभाओं से युक्त ऐसे व्यक्तित्व हैं जिन्हें हम देशप्रेमी, महान राष्ट्रीय नेता, श्रेष्ठ समाज सुधारक एवं उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ के रूप में भी जानते हैं। गाँधी जी का दर्शन, विश्व के प्रत्येक कोने के संतो की शिक्षाओं का समन्वय है वास्तव में उनका दर्शन अनंत एवं शाश्वत सत्य की पुर्नव्याख्या है, उन्होने अपनी प्रेरणा, विचार एवं विवेक के विभिन्न कूपों से प्राप्त की एवं उसके आधार पर एक नवीन निराले दर्शन का निर्माण किया (अवस्थी, ए.पी.)।

गाँधी जी के नैतिक एवं आध्यात्मिक आधार पर विश्व कवि श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जी लिखते है कि '' मुझे गाँधी जी के विषय में सबसे महत्वपूर्ण बात यह जान पड़ती है कि यद्यपि वे राजनीतिक, संगठनकर्त्ता, लोकनेता एवं नैतिक सुधारक के रूप मे श्रेष्ठ है तथापि वे मनुष्य के रूप मे सबसे श्रेष्ठकर है क्योंकि इनका कोई भी पक्ष एवं कार्य-कलाप उनकी मानवता को मर्यादित नही कर पाता है। इस मनुष्य के गुण महान है पर वह मनुष्य अपने गुणो से भी अधिक महान जान पड़ता है (सिंह, तीर्थेश्वर)।

इस तरह महात्मा गाँधी भारत के समाज वैज्ञानिक के रूप मे प्रचलित है हम सभी भारतवासी महात्मा गाँधी जी की 150 वीं जयन्ती वर्ष मना रहे अतः गाँधी जी के चिन्तन और अभियान के विविध आयामो का अकादमिक विचार विमर्श प्रासंगिक है इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में महात्मा गाँधी से संबंधित विषयों पर मंथन होगा।

समाज से जुड़े हुए ऐसे सभी व्यक्ति जो गाँधी जी के दर्शन से प्रभावित है , वे अपने अनुभवो को बाँटने हम जैसे सभी लोगों के बीच प्रेरणा स्त्रोत के रूप में उपस्थित होगें, अतएव दो दिवस के इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय संगोष्ठी मे सभी का स्वागत एवं अभिनन्दन ।

आप सबके सहभागिता की अपेक्षा में।

डॉ अनिता सिंह
संयोजक

डॉ. प्रीतीरानी मिश्रा
सह संयोजक

डॉ दीपक पाण्डेय
आयोजन सचिव

आयोजन समिति

- मुख्य संरक्षक -

डॉ. बंश गोपाल सिंह

कुलपति, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर (छ.ग.)

- संरक्षक -

डॉ. इंदु अनंत

कुलसचिव, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर (छ.ग.)

- संयोजक -

डॉ. अनिता सिंह

सहा. प्राध्यापक, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- सह संयोजक -

डॉ. प्रीती रानी मिश्रा

सहा. प्राध्यापक, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

- आयोजन सचिव -

डॉ. दीपक पाण्डेय

ICSSR-पोस्ट डाक्टोरल फेलो, पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

क्र. : 209 / कु. का. / राष्ट्रीय संगोष्ठी / 2019 बिलासपुर,दिनांक : 23 / 09 / 2019

// आदेश //

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुरद्वारा ''महात्मा गाँधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 15 एवं 16 अक्टूबर 2019 को किया जा रहा है। संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया जाता है।

संयोजक : डॉ. अनिता सिंह

सह-संयोजक : डॉ. प्रीतीरानी मिश्रा

आयोजनसचिव : डॉ. दीपक पाण्डेय

क्र.	समिति	सदस्यों के नाम	दायित्व
1.	स्मारिका (Souvenir) प्रकाशन एवं मुद्रण समिति	डॉ. पुष्कर दुबे	संयोजक
		डॉ. दीपक कुमार पाण्डेय	सदस्य
		हरीश चन्द्र वैष्णव	,,
2.	शैक्षणिक सत्र एवं तकनीकी सत्र निर्धारण समिति	डॉ. अनिता सिंह	संयोजक
		डॉ. प्रीति रानी मिश्रा	सदस्य
		डॉ. दीपक पाण्डेय	सदस्य
3.	वित्त समिति	श्री चंद्रशेखर जांगडे	संयोजक
		डॉ. बी. एल. गोयल	सदस्य
		डॉ. मोरध्वज त्रिपाठी	,,
		श्री गौतम सिंह	,,
4.	आमंत्रण एवं विवरणिका (Brochure) वितरण समिति	डॉ. प्रीति रानी मिश्रा	संयोजक
		डॉ. दीपक पाण्डेय	सदस्य
		श्री डोंगेश्वर साहू	,,
		रितु सिंह	,,
		श्वेता कुर्रे	सदस्य
		श्री राजेन्द्र चन्द्रवंशी	,,
		विष्णुकान्त यादव	,,
		श्री लक्ष्मी यादव	,,
		श्री नंदकिशोर यादव	,,
5.	मंच व्यवस्था समिति	डॉ. अनिता सिंह	संयोजक
		डॉ. प्रीति रानी मिश्रा	सदस्य
		श्वेता कुर्रे	सदस्य
		श्री महेन्द्र कश्यप	सदस्य
6.	पंजीयन एवं किट वितरण समिति	श्री रेशम लाल प्रधान	संयोजक
		श्री लव कुमार	सदस्य
		श्री पवन कुमार	,,
		श्रीमती अंजू साहू	,,

7.	चाय, जलपान एवं भोजन समिति	डॉ. एस. रुपेन्द्र राव	संयोजक
		श्री संजीव लावनियॉ	सदस्य
		डॉ. मोरध्वज त्रिपाठी	सदस्य
		श्री ओमप्रकाश गजेन्द्र	सदस्य
		डॉ. तनूजा बिरथरे	,,
		श्री डोंगेश्वर साहू	,,
		श्री प्रकाश तिवारी	,,
		श्री सतीश कुमार साहू	,,
		श्री कैलाश साहू	,,
		श्री हरदीप साहू	,,
		श्री रोहित भानु	,,
		श्री शुभाशीष डे	,,
8.	आतिथ्य एवं परिवहन समिति	डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	संयोजक
		श्री रेशमलाल प्रधान	सदस्य
		श्री संजीव कुमार लवानियाँ	,,
		श्री दीपक कुमार पाण्डेय	,,
		श्री ओमप्रकाश गजेन्द्र	,,
		श्री सौरभ वर्तक	,,
		श्री पी. पांण्डुरंगा	,,
		श्री सतीश कुमार साहू	,,
9.	तकनीकी समिति	श्री कपिलदेव पटेल	संयोजक
		श्री घनश्याम साहू	सदस्य
10.	प्रमाण-पत्र लेखन एवं वितरण समिति	डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	संयोजक
		श्री राघव वर्मा	सदस्य
		श्रीमती सुची चौधरी	सदस्य
		श्री प्रवीण शर्मा	सदस्य
		श्री गौतम सिंह	,,
		श्री धर्मेन्द्र पाण्डेय	,,
11.	अतिथि गृह समिति	डॉ. एस. रुपेन्द्र राव	संयोजक
		श्री अभिनंदन कर्माकर	सदस्य
		श्री मनोज पाण्डेय	,,
		श्री धनसिंह मरकाम	,,
		श्री सोहन बरेठ	,,
12.	प्रेस, मीडिया एवं रिपोर्टिंग समिति	डॉ. जयपाल सिंह प्रजापति	संयोजक
		श्री संजीव कुमार लवानियाँ	सदस्य
		डॉ. तनूजा बिरथरे	,,
		श्री सोमेन त्रिवेदी	,,
		रितु सिंह	,,

'हिन्द स्वराज' पर गाँधीजी का दृष्टिकोण

डॉ. बी.एल. गोयल
क्षेत्रीय निदेशक
पं. सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय बिलासपुर

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान)
सी.एम.डी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर

'हिन्द स्वराज' गाँधीवाद का बीज ग्रंथ है। यह पुस्तक मूलरुप से सन् 1909 में गाँधी जी के द्वारा गुजराती में, लंदन से दक्षिण अफ्रीका लौटते हुए पानी के जहाज पर हिन्दुस्तानियों के हिंसावादी पंथ को और उसी विचारधारा वाले दक्षिण अफ्रीका के एक वर्ग को दिये गये जवाब के रुप में लिखी गयी थी।

दो काल्पनिक पात्रों प्रश्नकर्ता 'पाठक' और उत्तरदाता 'संपादक' के बीच चले प्रश्नोत्तर के रुप में लिखी गई इस पुस्तक में पहले ही गाँधी जी ने 'संपादक' के रुप में उन अधिकांश प्रश्नों का उत्तर दे दिया था, जो प्रश्न भौतिकवाद, उपभोगवाद और यंत्रवाद पर आधारित आधुनिक सभ्यता के दोनों प्रारुपों - साम्यवादी और पूंजीवादी दृष्टिकोणों में ढल चुके मानसों के द्वारा पूछे जा सकते थे। लेकिन जैसा कि नोबल पुरस्कार विजेता वी.एस. नायपॉल ने कहा है - ''हिन्दुस्तान के लोग 'हिन्द स्वराज' नहीं पढ़ते हैं'' इसलिए, और जैसा कि इस शोधपत्र के लेखकों का मत है कि जिन्होंने इस पुस्तक को पढ़ा भी है, वे भी इस पुस्तक के मर्म को समझने के लिए आवष्यक दूरदृष्टि, अंर्तदृष्टि और पूर्वाग्रह रहितता का अभाव होने के कारण महात्मा के कथ्य की प्रमाणिकता और गहनता को समझने में असफल रहे हैं। यही कारण है कि इस पुस्तक की स्थापनाओं के विषय में गाँधी जी से हमेशा प्रश्न किए जाते रहे और वे जीवनपर्यन्त उन प्रश्नों का जवाब देते रहे। यह दुखद विडंबना है कि गाँधी जी के अत्यंत निकट के लोगों ने भी 'हिन्द स्वराज' में व्यक्त विचारों को महत्वहीन माना। जहाँ गाँधी जी के राजनैतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले इस पुस्तक में व्यक्त विचारों को 'अपरिपक्व' मानते थे, वहाँ गाँधी जी के शिष्य जवाहरलाल नेहरु इन विचारों को 'अव्यवहारिक' मानते थे।

गाँधी जी जीवन भर 'हिन्द स्वराज' में व्यक्त अपने विचारों का दृढ़तापूर्वक समर्थन करते रहे। यह एक दुर्लभ स्थिति थी कि किसी पुस्तक के लेखक को अपनी ही लिखी पुस्तक पर बार-बार अपना दृष्टिकोण व्यक्त करना पड़ा। आज, जबकि तथाकथित 'आधुनिक सभ्यता' के बताए रास्ते पर चलते हुए संपूर्ण मानव जाति अनेक संकटों से घिर गयी है और 'हिन्द स्वराज' में व्यक्त सभ्यता का प्रतिमान एक वैकल्पिक समाधान सिद्ध हो रहा है, यह जानना दिलचस्प होगा कि स्वयं गाँधी जी अपनी इस महान कृति को किस दृष्टि से देखते थे। इसी, लगभग अचर्चित पक्ष को उजागर करना ही इस शोधपत्र का प्रयोजन है।

Gandhi versus India

PRATIBHA J MISHRA
Professor, Department of Social Work
Guru Ghasidas University, Bilaspur (C.G)

Progressive Individualism is the fundamental note of Gandhian life and thought. His idea of progression relies on *individual freedom* and its denial is contrary to the very nature of man. The individual is the end of development for which the State exists. In this, the authority of the State is only derivative and not sovereign. Gandhi was of the firm opinion that political democracy without economic democracy was meaningless and was akin to a ship without a rudder. He was aware of the widening gulf between the rich and the poor who were in the majority. He suggested that means of production and distribution should be controlled by the capitalist, but he should hold the wealth *as the trustee* of the society. He was not at all opposed to modernisation, to which he believed was essential for self-sustaining, integrative growth of India's nationalism.

Gandhi's idealism based upon the *moral and ethical interpretations* of means and ends, trusteeship, *satyagraha, non-violence, sarvodaya*, concept of education, non-possession, power, prohibition, new socio-economic order, international peace and humanity as a whole have been subdued by the over-glorified materialism and distorted sense of perceptions and cognitions. The present socio-economic order reflects the *cultural-lag* of spiritualism that has been superseded by materialistic influences. The social maladjustment is exhibited in the forms of stressful life style, rising gap between aspirations and achievements, corruption, difference between thoughts, feelings and actions and global menace like terrorism to say the least.

Gandhiji especially emphasized upon purity of means. He made no distinction between and end. To quote him: "Means and end are convertible terms in my philosophy of life. They say means are after all, means. I would say that means are after all everything. As the means, so the end. There is no wall of separation between means and end. Indeed the Creator has given no control (and that too very limited) over means, none over the end." Again, "the means may be likened to a seed, the end to a tree, and there is just the same inviolable connection between the means and the end as between the seed and tree." The view of Gandhiji was that not only the end should be high and laudable; the means should also be moral.

KEY WORDS : idealism,realism,Non violence,Education ,Midernisation

महात्मा गाँधी जी का शिक्षा दर्शन एवं नई तालीम

कु. अदिति सचदेव
बी.ए.आनर्स, प्रथम सेमेस्टर,
गुरु घासीदास वि.वि., बिलासपुर

श्रीमती कल्पना सचदेव
व्याख्याता वाणिज्य
महारानी लक्ष्मीबाई शास. कन्या विद्यालय

डा. राजकुमार सचदेव
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शास. महामाया महा., रतनपुर

भारतीय संस्कृति में शिक्षा को केवल जीविकोपार्जन का साधन मात्र नहीं माना गया है, वह तो आध्यात्मिक जीवन की दीक्षा है, जिसे हम सत्य और सदगुण के अवगाहन में आत्मा की एक खोज कह सकते हैं। यह हमारा वस्तुतः दूसरा जन्म है। वह शिक्षा सचमुच शिक्षा नहीं, जो हमें त्याग और सेवा की प्रेरणा प्रदान नहीं कर सकती है। शिक्षा का महत्व तो तभी प्रकट होगा, जब वह अपने वातावरण को प्रभावित करेगी। शिक्षा का अर्थ है अपने को बाहर ले जाना अर्थात मानव के अंदर जो शक्ति छिपी हुई है या मूर्छित पड़ी हुई है उसे विकसित करना, उदबुद्व करना। इसलिए शिक्षा और साक्षरता के बीच कोई अनिवार्य संबंध नहीं है। शिक्षा का उद्देश्य सदाचरण है। सच्ची शिक्षा तो बच्चों के चरित्र निर्माण में है। शिक्षा अक्षर ज्ञान या शब्द ज्ञान के रुप में कोई अव्यवस्थित और अराजकतापूर्ण जानकारियों का ढेर नहीं, यह तो जीवन निर्पाण, मानव निर्माण और चरित्र निर्माण की प्रक्रिया है। केवल शब्द ज्ञान या केवल ज्ञान की गठरी सिर पर लाद देने से न तो सच्चा ज्ञान मिल सकता है और न सदाचरण ही। शिक्षा को साक्षरता का पर्याय मान लेना भी भयंकर भूल है। सचमुच अपने आप में साक्षरता तो शिक्षा है भी नहीं, क्योंकि यह न तो शिक्षा का आरंभ है और न अंत ही।

शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य को सच्चे अर्थ में मनुष्य बनाना है। जो शिक्षा मानवीय सदगुणों के विकास में योग नहीं देती और व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त नहीं करती वह शिक्षा अनुपयोगी है। मेरे विचार से मानव बनना ही अत्यंत महत्वपूर्ण शिक्षा है।

शिक्षा दर्शन में महात्मा गाँधी का स्थान

डॉ. बीना सिंह (शोध निदेशक)
अमित चन्द्रा (शोधार्थी)
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

महात्मा गाँधी जी का शिक्षा-दर्शन मे महत्वपूर्ण स्थान है वे मानवतावादी चिंतक थे। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का प्रयोग शिक्षा में किया। शिक्षा को व्यवहारपरक बनाने में उनका विचार परम्परागत शिक्षा शास्त्रीयों से हटकर था। उन्होने अपनी विचारधारा में समस्त विचारधाराओं का संश्लेषण किया है यथा आदर्शवाद, प्रकृतिवाद, प्रयोगवाद, मानवतावाद तथा यथार्थवाद। उनके विचारों में वैयक्तिकता तथा सामाजिकता का अद्भुद समन्वय मिलता है। कुछ लोग उन्हें समाजवादी विचारक तथा मार्क्स के करीब मानते थे। सत्य तो यह है कि गाँधी जी का चिन्तन पूरी मानवता के लिये था।

महात्मा गाँधी जी ने व्यवहारपरक जिस ''बेसिक शिक्षा'' का प्रतिपादन किया उसका प्रभाव भारतवर्ष में जितने भी शिक्षा आयोग बनें, उन पर पड़ा। महात्मा गाँधी जी के ''बेसिक शिक्षा योजना'' से प्रेरणा लेकर ''कोठारी आयोग'' ने अपनी संस्तुतियों में कार्यानुभव को महत्व दिया। उनका चिन्तन यथार्थवादी था, उनके प्रौढ़ शिक्षा, स्त्री शिक्षा, धर्म शिक्षा के विषय में विचार बहुत ही महत्वपूर्ण है, जिसने विश्व के लिए एक नवीन मार्ग प्रशस्त किया। आज सम्पूर्ण विश्व सत्य-अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी जी का बहुत ऋणी हैं। महात्मा गाँधी स्वयं में एक संस्था थें, जिनमें विभिन्न विचारधारायें संगृहीत थी, लेकिन उन्होने एक चतुर शिल्पी की भांति उन धाराओं का प्रयोग अपनी धाराओ या सिद्धान्तों में वहीं किया जहाँ उसकी आवश्यकता थी।

Self-concept As Essential Element of Gandhi's Philosophy

Dr. Anita Singh
Asst. Prof.(Education Dept.)

Mrs, Ritika Soni
Research Scholar (Education Dept)

Pt. Sunderlal Sharma (Open) University Chhatisgarh, Bilaspur

Gandhiji is both idealistic and pragmatic. He has deep devotion for religion. Gandhiji believe in soul,humanity, social values, feeling of equality, character building ,co-operation,simplicity,simple living and high thinking as a basic ornaments of an individual Self. Self-concept is generally thought of as our individual perceptions of our behaviour, abilities, and unique characteristics. It is essentially a mental picture of who you are as a person. Self-concept deals with the individual thought about him/herself as per which individual reacts to the society.Gandhiji preferred the education concepts which focus behavioural aspects of an individual rather than theoretical which increase the capacity of a child.so thathe/she may develop physically & mentally both ways to gain progress in the society.

महात्मा गांधी के शिक्षादर्शन के परिप्रेक्ष्य में डी.एल.एड. प्रशिक्षण संस्थाओं का सम्पूर्ण गुणवत्ता मूल्यांकन

सत्यप्रकाश यादव
शोधार्थी शिक्षा

डॉ. प्रकृति जेम्स
सहायक प्राध्यापक

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

महात्मा गाँधी जी आदर्शवादी व्यक्तित्व के रुप में पहचाने जाते रहें हैं। वे प्रयोजनवादी विचारधारा रखते थे, अर्थात जब जिस कार्य या उद्देश्य की आवश्यकता है वह पूर्ण करो, इसलिए उन्हें लोग एक अच्छे समाज सेवक के रुप में मानते हैं। शिक्षा में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होनें शोषण-विहीन समाज की स्थापना को अपना मूल मंत्र माना। स्वस्थ समाज का निर्माण शिक्षा से ही सम्भव है, अतः गाँधी जी ने बेसिक शिक्षा को प्रस्तावित किया। गाँधी जी ने बुनियादी शिक्षा में जो 6-14 वर्ष की आयु के सभी बच्चो को शिक्षित व सुंस्कृत बनाने पर जोर दिया है।

शिक्षा में सम्पूर्ण गुणवत्ता का निर्धारण, सुप्रशिक्षित अध्यापकों की उपलब्धता, अध्यापक छात्र का उचित संबंध, महाविद्यालय में उपलब्ध शैक्षणिक संसाधन तथा आवश्यक कक्षा कक्ष अन्तः क्रियाओं एवं सुविधाओं से किया जाता है। किसी संस्थान की शैक्षणिक गुणवत्ता बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि अध्यापक प्रशिक्षित हो, शिक्षकों में शिक्षा के प्रति पढ़ने की रुचि, प्रेम भावना तथा बहुआयामी व्यक्तित्व के गुण होने चाहिए, प्रशिक्षार्थियों के प्रति प्रेम भावना तथा प्रशिक्षार्थियों में उनके गुणों का समावेश करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि स्वयं में गुणवत्ता ही अन्ततः शिक्षा में गुणवत्ता की प्रेरक होती है। ऐसे शिक्षकों की सभी शैक्षिक संस्थाओं को आवश्यकता होती है। एक अच्छे संस्थान को शैक्षणिक गुणवत्ता बढ़ाने हेतु प्रशिक्षित अध्यापकों को आवश्यक सुविधायें उपलब्ध करानी चाहिए,साथ ही उनके पद अनुरुप वेतन भी देना चाहिए उसी के साथ संस्थाओं में शैक्षणिक सहायक सामग्री तथ शैक्षिक उपकरण भी उपलब्ध होने चाहिए। यह भी आवश्यक है कि संस्था में एक आदर्श प्राचार्य द्वारा मार्गदर्शन हो। गुणवत्ता प्राप्ति हेतु आवश्यक मानकों की सिफारिश विभिन्न भारतीय शिक्षा नीतियों द्वारा भी की गई हैं।

गाँधी जी एवं ग्राम स्वराज

डॉ. अनिता सिंह
निर्देशिका, सहायक प्राध्यापक
पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, बिलासपुर

नीता कश्यप
सहायक प्राध्यापक
पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा महा., लावर, बिलासपुर

स्वराज का अर्थ है - "स्वशासन" या "अपना राज्य" भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के समय प्रचलित यह शब्द आत्म निर्णय तथा स्वाधीनता की मांग पर बल देता था स्वराज शब्द का पहला प्रयोग स्वमिदयानंद सरस्वती ने किया था प्रारंभिक उदार वादियों ने स्वाधीनता को दूरगामी लक्ष्य मानते हुए 'स्वशासन' के स्थान पर अच्छी सरकार के लक्ष्य की वरीयता दी | तत्पश्चात उग्रवादी काल में यह शब्द लोकप्रिय हुवा,जब 'बाल गंगाधर तिलक' ने यह उद्घोषणा की,कि "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मै इसे लेकर रहूँगा"|

गाँधी जी ने सर्वप्रथम १९२० में कहा की "मेरा स्वराज भारत के लिए संसदीय शाशन की मांग हैं जो व्यस्क मताधिकार पर आधारित होगा| गाँधी जी का मत था स्वराज का अर्थ जन प्रतिनिधियों द्वारा संचालीत ऐसे व्यवस्था जो जन-आवश्यकता तथा जन -आकांक्षाओं के अनुरूप हो |" वस्तुतः गांधीजी का स्वराज का विचार ब्रिटेन के राजनैतिक,सामाजिक,आर्थिक ब्यूरोक्रेटीक कानूनी सैनिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं का बहिष्कार करने का आन्दोलन था |

यद्यपि गांधीजी का स्वराज का सपना पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया जा सका फिर भी उनके द्वारा स्थापित अनेक स्वयं सेवी संस्थाओ ने इस दिशा में काफी प्रयास किये |

मॉडल स्कूल और गाँधीजी का शिक्षा दर्शन

डॉ. अनिता सिंह
शिक्षा विभाग (सहा. प्राध्यापक)

भरत प्रसाद गुप्ता
शिक्षा विभाग (शोधार्थी)

पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

महात्मा गाँधी राष्ट्रीय प्रगति और विकास में योगदान देने वाले मानव विकास की एक समग्र अवधारणा रखते थे और वे चरित्र निर्माण, कौशल और मानव निर्माण में विश्वास रखते थे। बुनियादि शिक्षा गाँधी जी के शिक्षा दर्शन की देन है। बुनियादि शिक्षा के माध्यम से गाँधी जी बालकों में हस्त कौशल शिक्षा के भी समर्थक थे जिसका प्रयत्न बालक शिक्षा प्राप्त करने के साथ-साथ अपने लिए जीविकोपार्जन भी करते जाए। वर्तमान समय में छत्तीसगढ़ राज्य में 74 मॉडल स्कूल कार्यरत हैं। जिनका उद्देश्य अंग्रेजी माध्यम में उच्च गुणवत्तपूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। यह विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों के प्रतिभावान बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से खोला गया है। इस स्कूल में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के नियमों पर शिक्षा प्रदान की जाती है। इन विद्यालयों में विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों को कराने के साथ-साथ कुछ अन्य संस्कृति से जुड़े कार्य कराए जाते हैं।

यह शोध-पत्र गाँधी जी के शिक्षा दर्शन का मॉडल स्कूल के सन्दर्भ में है। बच्चों के लिए कौशल और कुछ स्थानीय शिल्प को शिक्षा का माध्यम बनाया जाए। जिसमें गाँधी जी के शिक्षा दर्शनों के आधार मॉडल स्कूल के स्थापना एवं कार्यप्रणाली का विश्लेषणात्मक वर्णन है।

गाँधी जी और नारी सशक्तिकरण

शैली ओझा,
शोधार्थी
पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में महात्मा गाँधी का योगदान अतुलनीय है। स्वतंत्रता की अगुवाई के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन की लड़ाई में भी गाँधी जी का योगदान अविस्मरणीय है। भेदभाव-मुक्त समाज के निर्माण हेतु इन्होंने अथक प्रयास किए जिसमें प्रमुख रुप से अछूतोद्धार, अस्पृष्यता एवं नारी उद्धार है। गाँधी जी का विचार था कि असमानता चाहे कैसी भी हो, किसी भी प्रकार की हो, किसी भी क्षेत्र में हो वैमनस्यता के बीज बोती है। अतः समाज में समानता का भाव होना आवष्यक है। समानता की इसी कड़ी में समाज में नारी का भी उचित

मान-सम्मान के साथ-साथ समान अधिकार हो। यह कल्पना नारी सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर साबित हुआ। गाँधी जी सिर्फ कहते ही नहीं वरन् करते भी थे। तभी तो स्वाधीनता आंदोलन में भी नारी को गाँधी जी ने अपने साथ बराबरी का स्थान दिया था। जिनमें सरला देवी, राजकुमारी अमृत कौर, सुशीला नायर, आभा एवं मनु आदि सदैव गाँधी जी के साथ प्रत्येक आंदोलन में सहभागी रही हैं। गाँधी जी का विचार था कि जिस देश की आधी आबादी सक्रिय नहीं होगी, अधिकार विहीन रहेगी उस देश का पतन सुनिश्चित है। इसके विपरीत जिस देश में नारी को उसके पूर्ण अधिकार प्रदत्त होंगे उस देश के विकास की कोई सीमा नहीं रहेगी। स्वाधीन भारत में नारी सशक्तिकरण का पहला उदाहरण राजकुमारी अमृत कौर थीं जो आजाद भारत की पहली स्वास्थ्य मंत्री बनीं तथा प्रथम राजदूत विजयलक्ष्मी पंडित रहीं। तत्पश्चात् इंदिरा गाँधी व अन्य ने गाँधी जी के सपनों को साकार किया। वे असमानता के विभीशिका और समानता के परिणाम दोनों से अवगत थे। परिणामस्वरुप समानता के अधिकार के साथ-साथ आधी आबादी की शक्ति का सफल प्रयोग स्वाधीनता आंदोलन में दिखाई पड़ा। मातृ-शक्ति ने पूर्ण रुप से गाँधी जी का सहयोग किया। जिसके फलस्वरुप ही सत्याग्रह व असहयोग आंदोलन अपनी शक्ति का प्रहार प्रकाट्य रुप में कर सके।

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में गाँधीयन

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन: वर्तमान शिक्षा पद्धति के संदर्भ में

डॉ. बीना सिंह
विभागाध्यक्ष (शिक्षा)

नमिता गौराहा
शोधार्थी

पंडित सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

"साक्षारता न तो शिक्षा का अंत है, और न ही आरंभ"

गाँधी जी को राजनीति, समाज-सुधार, सत्य और अहिंसा के क्षेत्रों में महान सफलताएँ प्राप्त हुई है। उनके अनुसार देश के दुषित समाज मे किसी आदर्श राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती। प्रारंभिक शिक्षा जन्म से ही जाती है, प्रारम्भिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा दर्शन का मूर्त रुप थी। आपके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य भारतीय जनता के हृदय तथा मन को पवित्र करके एक शोषण विहिन समाज की स्थापना करना था। उनका विश्वास था कि शिक्षा से बालक की समस्त शक्तियों का विकास करना चाहिये। जिससे वह संपूर्ण मानव बन सके। पूर्ण मानव का अर्थ बालक की समस्त शक्तियों का विकास करना है, जिससे वह हृदय, मन तथा आत्मा के समुचित विकास से है। इस प्रकार गाँधीजी के अनुसार शिक्षा को बालक के शारीरिक, मानसिक अथवा बौद्धिक एवं आध्यात्मिक गुणों को जागृत करके उसका समुचित विकास करना चाहिए। जिससे वह अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कर सके। गाँधी जी की शिक्षा-दर्शन के आधार पर वर्तमान शिक्षा पद्धति में भी बालक यहाँ प्रयास किया जा रहा है कि रटने वाली शिक्षा को छोड़कर इस शिक्षा को प्राप्त करें जिसमें उसका स्वांगीण विकास हो, जिससे वह मशीनी मानव की जगह एक स्वस्थ्य मानसिक ज्ञान को प्राप्त कर सके। वर्तमान में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रकिया गाँधी जी के शिक्षा-दर्शन का जीवंत उदाहरण है, जिसमें बालक के विकास को मूल्यांकन द्वारा आकलन हेतु जिन आधारों में रखा गया है, वह संज्ञानात्मक क्षेत्र एवं सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र है। इस प्रकार दोनो क्षेत्र बालक के विकासात्मक मार्ग को प्रदर्शित करता है एवं बालक के सर्वोत्तम गुणों का चाहुँमुखी विकास होता है।

छत्तीसगढ़ के लोकगीतों में गाँधीयन

डॉ. तारणीश गौतम
सहायक प्राध्यापक
शास. बिलासा कन्या स्नात्कोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

02 अक्टूबर 2019 से संपूर्ण देश में और विश्व में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी की 150 वीं जयंती मनाई जा रही है। भारत के प्रत्येक अंचल में चाहे वह षहरी हो या ग्रामीण, शासकीय और अशासकीय स्तर पर गाँधी जयंती समारोहों का आयोजन उत्साह एवं लगन के साथ किया जा रहा है।

गाँधी जी की इस 150 वीं जयंती समारोह के अंतर्गत अनेक शैक्षणिक और अन्य संस्थाओं की ओर से गाँधीयन पर अखिल भारतीय स्तर, राज्यीय स्तर और क्षेत्रीय स्तर पर शोध-संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। उसके पीछे मूल भावना यही है कि भारत की इस पीढ़ी को जो स्वाधीनता के पश्चात् जन्मी हैं, गाँधी जी के आविर्भाव और उनके प्रभाव तथा उनकी अलौकिक शक्ति का परिचय कराया जा सके एवं उन्हें गाँधी जी के समकालीन भारत की सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों का भी बोध कराया जा सके। नई पीढ़ी को यह ज्ञात हो सके कि सादगी से परिपूर्ण इस महान संत ने किस तरह अहिंसा के माध्यम से सुप्त राष्ट्र में नव-जागरण का संचार किया था। इस नव-जागरण से छत्तीसगढ़ प्रांत भी अछूता नहीं रहा था। महात्मा जी के आगमन मात्र ने इस शांतिप्रिय क्षेत्र में स्वाधीनता की मशाल जलाकर सुप्त प्रदयों में ज्वाला उत्पन्न कर दी थी। 1920 और 1933 की यात्राओं ने छत्तीसगढ़ के जनमानस को झकझोर कर एक नवीन संदेश और अभिनव चेतना प्रदान की। फलस्वरुप जुलाई 1920 में कंडेल नहर सत्याग्रह प्रारंभ हुआ जो महात्मा जी के आगमन दिसंबर 1920 के साथ समाप्त हुआ था। 1921 में अंग्रेजी शिक्षा-प्रणाली के विरोध में राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना की गई। 1922 में वन विभाग की नादिरशाही के विरोध में सिहावा में आदिवासियों का सत्याग्रह प्रारंभ हुआ। इसी तरह छत्तीसगढ़ में समय समय पर अन्य अहिंसात्मक आंदोलन चलाये गए, जिनका प्रभाव सीधे तौर पर आम जनमानस पर पड़ा और वह लोकवाणी बनकर लोकगीतों में तब्दील होती गई। अब गाँधीयन जन-मन में रच बस गया था।

ज्ञान की सांस्कृतिक संबंधता : गाँधी दर्शन एक चिंतन

डॉ. एस. रुपेन्द्र राव
विभागाध्यक्ष, मनोविज्ञान विभाग
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

प्राचीन काल से आज के अत्याधुनिक वैज्ञानिक काल तक ज्ञान प्राप्ति मानवीय जीवन का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य रहा है। मनुष्य अपनी जिज्ञासा से प्रेरित होकर जीवन उपयोगी एवं अनुसंधान परक ज्ञान प्राप्त करते रहा है। आधुनिक समय में प्राप्त शिक्षा और ज्ञान में बहुत अंतर है, शिक्षा जहाँ एक ओर व्यक्तित्त्व के सीमित पक्ष का वर्धन है, वही ज्ञान संपर्ण व्यक्तित्त्व विकास का परिचायक है, ज्ञान प्राप्ति का संस्कृति से बड़ा गहरा संबंध है। सामाजिक जीवन में रहते हुए संस्कृति की जड़ो से जुड़कर मूल्यपरक, प्रासांगिक, उन्नत एवं स्वभाषा से अर्जित ज्ञान की संकल्पना हमें गाँधी दर्शन में देखने को मिलती है। गाँधी दर्शन में ज्ञान के स्वरुप एवं उसकी प्राप्ति के मार्ग की भी व्याख्या मिलती है, ज्ञान केवल भरण भोषण तक सीमित न रहे, अपितु यह स्वकल्याण और लोक कल्याणकारी भी बने और इसे

प्राप्त करने में सत्य, अहिंसा, सुचिता, श्रेष्ठता, धर्म, समाज एवं संस्कृति के श्रेष्ठ मूल्यों का समन्वय भी हो, वह समय-समय पर समाजपयोगी भी सिद्ध हो इसकी योजना गाँधी दर्शन में दिखती है। ''श्रद्धावाने लभते ज्ञानं'' की बात हमारे शास्त्र में कही गई है अर्थात श्रद्धा से युक्त व्यक्तित्त्व ही श्रेष्ठ ज्ञान का अधिकारी होता है इसी प्रकार जीवन में आने वाली अनेकानेक कठिनाईयों के बाद भी जीवन मूल्य को संरक्षित रखते हुए आगे बढ़ना भी ज्ञान प्राप्ति का ही एक पक्ष है। गाँधी जी के अनुसार ज्ञान प्राप्ति केवल उदरपोषण का माध्यम या जीवन को सुविधायुक्त बनाने का माध्यम ही न बनकर रह जाये अपितु यह व्यक्तित्त्व के सर्वांगीण विकास का एक सशक्त माध्यम भी बनना चाहिए।

आधुनिक समय में जहाँ सूचना का अंबार सा दिखता है वहाँ वैश्विक समाज में संस्कृति- पोषित ज्ञान और एक दूसरे से उसकी संबंधता बहुत ही अनिवार्य पहलू है। प्रस्तुत अध्ययन में गाँधी जी के चिंतन और आधुनिक एवं प्राचीन ज्ञान से सांस्कृतिक वातावरण की संबंधता का अध्ययन करना इसका उद्देश्य है।

संकेत शब्द - ज्ञान, सांस्कृतिक संबंधता, गाँधी चिंतन, जीवन दर्शन आदि।

भारत वर्ष के युवाओं के लिए महात्मा गाँधी एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व

Dr. Rituraj Trivedi

Dr. Preeti Rani Mishra
Assistant Prof. SoS in Library & Inf. Science,
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University, Chhattisgarh, Bilaspur

सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले गाँधी को लोग प्यार से बाबू बुलाते थे। हमें बापू से सीखना चाहिए कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हो, सत्य का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए। उन्होंने पूरे देश को बताया कि हर लड़ाई खून खरावे से पूरी नहीं होती। लड़ाई अहिंसा का रास्ता अपनाकर भी लड़ी जा सकती है। चाहे वो देश को आजाद करवाने की ही लड़ाई क्यों न हो। महात्मा गाँधी को विश्वपटल पर अहिंसा के तौर पर माना जाता है। आज दुनिया भर में हिंसा बढ़ती जा रही है। ऐसे में बापू के संदेश को लोगों तक पहुँचाना चाहिए। महात्मा गाँधी के अनमोल विचार जो वर्तमान युवा पीढ़ी को अपनाने चाहिए।

गाँधी जी ने अपना जीवन सत्य की व्यापक खोज में समर्पित कर दिया था।उन्होंने अपनी आत्मकथा को सत्य के प्रयोग का नाम दिया था। गाँधी जी के विचारों को अपनाकर भारत वर्ष का युवा भी सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चल सकता है।

गाँधी जी विशाल व्यक्तित्व के विराट पुरुष थे उनका चिंतन उनका प्रयोग उनका चरित्र उनका कार्य उनकी जीवन शैली सब कुछ प्रेरणादायक है। गाँधी जी ने स्वच्छता के साथ-साथ सामाजिक और सार्वजनिक जीवन की भी भीतर सफाई पर भी जोर दिया था। अर्थात मन निर्मल हो, सबके प्रति आदर सद्भाव रहना चाहिए। गांधी जी के विचारों को अपनाकर हम भी सत्य-हिंसा के मार्ग पर चल सकते हैं और अपने जीवन को बदल सकते हैं।

भारतीय युवा हमेशा से गाँधी जी के चिंतन का केंद्र बिंदु रहा है। सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा औजार मानते थे। उनका मानना था कि शोषणमुक्त, स्वालंबी एवं परस्परपोषक समाज के निर्माण में युवाओं की अहम भूमिका है एवं भविष्य में भी होगी। वर्तमान युवा प्रजातांत्रिक मूल्यों एवं तथ्यपरक सिद्धांतों को मानता है। गांधीजी हमेशा युवाओं से रचनात्मक सहयोग की अपेक्षा रखते थे।

आज हमारे युवाओं को मौका है कि वे गाँधीजी को अपना आदर्श बनाकर सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। हमारे युवा उनके दर्शन को अपनाकर अपने व्यक्तित्व एवं राष्ट्र के विकास में पूर्ण ऊर्जा एवं उत्साह से समर्पित हों।

Gandhian Philosophy and Sustaining Women Empowerment

Dr. Archana Yadav
Author
Assistant Professor

Ms. Aakriti Dewangan
Co-Author
Research Scholar

Mrs. Deepika Pandey
Co-Author
Research Scholar

Department of Social Work
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Koni, Bilaspur (CG)

Women empowerment is one of the important issues which need to be addressed. Although it has become a burning issue in 21st century and many initiatives has been taken by government at global as well as national level to reform women status worldwide, still, it is a long way to go as it has not reached to every woman standing in the last of the queue. In India before independence many activists such as Mahatma Gandhi, Raja Ram Mohan Roy and Swami DayanandSaraswati have done many attempts to eradicate social evils existing in the Indian society such as Sati Pratha, abolition of child marriage, initiatives for widow remarriage, etc. and emphasized on many social transformations such as women's education, dowry prohibition, widow remarriage, to bring awareness in society about the position of women and to remove gender disparity so that women's status in Indian society can be improved and their self-confidence can be enhanced.

Mahatma Gandhi, the father of the nation, considered women as one of the important section of the society. In Gandhi's viewpoint, women build family, society and nation. Thus, there is a firm need to empower women, so that a family, society, nation can flourish. The main objective of the research paper is to throw light on the status of women empowerment, the contribution of Gandhian philosophy to sustain women empowerment in India and its relevance on the present generation. The paper is based on the review paper by going focussing on Gandhian Philosophy on Women Empowerment.

Keywords: Gandhian Philosophy, Women Empowerment, Gender Disparity, Social Evils, Social Transformation.

हिन्दी सिनेमा और महात्मा गाँधी

डॉ. (श्रीमती) अनुसुइया अग्रवाल, डी. लिट्.
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष - हिंदी
शा. म. व. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुंद (छ.ग.)

महात्मा गाँधी एक ऐसा व्यक्तित्व जिसने हर किसी को किसी न किसी तरीके से जीवन के किसी न किसी मोड़ पर जरुर प्रभावित किया। सिर्फ एक- दो इंसान नहीं अपितु पूरा देश उनके साथ उठ खड़ा हुआ। हर इंसान के अंतर्मन को उन्होंने जगाया। गाँधी जी से लोग क्यों जुड़ते चले गए दरअसल वो असाधारण होते हुए भी साधारण तरीके से लोगों

के बीच रहें। कभी दिखावे को तवज्जों नहीं दिया। यही वजह रही कि वे अँग्रेज़ी सूट- बूट के बजाय साधारण सी खादी की धोती पहनते थे। यही नहीं-- चरखा चलाकर खुद खादी बनाते थे, रेल के जनरल डिब्बे में यात्रा किया करते थे। उन्होंने अपने आवरण और आचरण में कभी फर्क नहीं रखा। शायद इसलिए उन्होंने करोड़ों लोगों को प्रेरित किया।

भले ही यह घटना इतिहास बन गई पर आज भी लोगों के जेहन में इतनी जीवन्त है कि बापू के सहकार, सत्य, अहिंसा आदि सिद्धांतों को आधार बनाकर फिल्म निर्माता आज न केवल फिल्में बना रहे हैं अपितु उसमें निहित श्रेष्ठ संदेश के कारण वे फिल्में सफल भी हो रही हैं। उनकी विचारधारा से प्रभावित होकर कई गीतकारों के कलम से देशभक्ति के गीत लिखें गए।

बापू संभवतः ऐसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे जिन पर सर्वाधिक फिल्में बनी और गाने लिखे गए। सन् 1954 में महात्मा पर आधारित फिल्म 'जागृति' को भला कैसे भुलाया जा सकता है जिसमें तब आशा भोसले द्वारा गाया गीत 'साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल' आज भी लोगों की जुबांन पर है। यह सदाबहार गीत काफी मशहूर रहा। सन् 1968 में 'परिवार' फिल्म के उस गाने को भी लोग आज भी गुनगुनाते रहते हैं- ''आज है दो अक्टूबर का दिन, आज का दिन बड़ा महान। आज के दिन दो फूल खिले, जिनसे महका हिन्दुस्तान।''

गद्य साहित्य में गाँधीवादी चिन्तन

डॉ. एम. आर. आगर
सहायक प्राध्यापक (रसायनशास्त्र)
शासकीय अग्रसेन महाविद्यालय बिल्हा, बिलासपुर

डॉ. एच. आर. आगर
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महा. बिलासपुर

गाँधी जी सामाजिक विचारधारा का समर्थन करते थे। इसलिए उन्होंने समाज के प्रत्येक पहलू के विषय में गहन चिन्तन किया। गाँधी जी ने समाज की बंधी हुई कल्पनाओं को तोड़ने के स्थान पर उनका परिष्कार करते हुये उन्हें विकसित रुप प्रदान करने का प्रयास किया। 'सत्य' गाँधीवादी चिन्तन का मूलाधार है। उनका विचार था कि सत्य के साक्षात्कार से सदैव सद्बुद्धि प्राप्त होती है, जिसमें सबके प्रति अहिंसा की भावना उद्भूत होती है। इसलिए अहिंसा सत्य का ही दूसरा पहलू माना जाता है। अहिंसा न केवल द्वेष भावना को समाप्त करती है बल्कि आपस में भाईचारे की भावना भी जागृत करती है। गाँधी जी का विचार था कि अहिंसा प्राप्ति हेतु आत्मशुद्धि आवश्यक है और आत्मशुद्धि केवल तभी हो सकती है जब हम अहंकार का त्याग करते हैं। अहंकार त्याग के लिए तपस्या और भगवान की भक्ति आवश्यक है, इन दोनों की अनुपस्थिति में अहंकार का त्याग असंभव है। जब व्यक्ति तप करने की ठानता है तो उससे पूर्व उसे भोग-विलास का त्याग और आत्मपीड़न भी करना पड़ता है। ऐसा करने से मनुश्य को शक्ति की प्राप्ति होती है, यह शक्ति केवल ईश्वर में अटल विश्वास रखने से ही प्राप्त होती है। तप या आत्मशुद्धि अपना ही कल्याण नहीं करती बल्कि समस्त प्राणीमात्र को सुखी एवं समषद्धि रखती है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि गाँधी जी ने तप और त्याग का समर्थन किया और आनंद तथा भोग का कठोर विरोध किया है। हिंदी गद्य साहित्यकारों के विचारधाराओं में गाँधी जी के विचारों का प्रभाव पड़ा है। जैसे प्रेमचंद जी ने इस विचारधारा से प्रभावित होते हुए 'कफन' नामक कहानी में कहा है- ''दुनिया का दस्तूर है लोग ब्राम्हणों को हजारों रुपए क्यों देते हैं ? कौन देखता है परलोक में मिलते हैं या नहीं।''

समाज सुधारक की दृष्टि से गाँधी जी को उच्च कोटि में गिना जाता था। आदर्श नीतियों के माध्यम से ही गाँधी जी ने समाज को एक आदर्श स्वरुप प्रदान किया है गाँधी जी की नीतियों ने अनेक कहानीकार प्रभावित हुए। इनमें प्रमुख रुप से कमलेश्वर, अमृतराय, राहुल संस्कृत्यायन, प्रेमचंद, जैनेंद्र आदि हैं। इन लोगों ने गाँधी जी के जिन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया वे उस समय भी विद्यमान थे। गाँधी जी ने सत्य, अहिंसा, भगवान के प्रति आस्तिक भाव, नीतिमूलक धार्मिक आचरण, परस्पर सेवाभाव, धर्मों में समान आस्था, रुढ़िवाद, छुआछूत के उन्मूलन का भरसक प्रयास किया। गाँधीजी जैसे महान् पुरुष के पग चिन्हों पर चलकर देश का सुदृढ़ बनाने के लिए संकल्प करना चाहिए।

Character Strength Evaluation: Relevance of Gandhian Philosophy

Dr. Jay Singh
Assistant Professor (Psychology)
Govt. Danteshwari, PG College, Dantewada, CG

The present assessment is an attempt to establish a connection of character strength of human being like gratitude and forgiveness with philosophy of National Father Mahatma Gandhi. Deterioration in human values and ethical behavior is well discussed issue in current scenario. When everyone wants to be not only successful but want more success than others, it creates a lot of negative competitiveness. In this situation it is needed to look back. To understand the relevance of Gandhian views in the development of character strength in youth, an interview based survey was under taken with educators, social workers and some guardians. Outcome was very clear; as common answers shows that youths are usually want to get succeed on any cost with this dangerous belief that one can do everything on the basis of money power. It can be control with some strong statements like Gandhi says that *"You must not lose faith in humanity. Humanity is an ocean; if a few drops of the ocean are dirty, the ocean does not become dirty"*. We should think that, where we want to go? Which kind of success we want to get? and why we are getting more stressed with increased facilities in life. Therefore, human society urgently needs to understand the importance of Gandhian Philosophy in order to become happier rather than successful. We also should remember this statement of Gandhi that *"The weak can never forgive, Forgiveness is the attribute of the strong."*

GANDHIJI AND TECHNIQUE OF SATYAGRAHA

Dr. Mahesh kumar shukla
Assist. Prof.(Dep.of History)

Atul Kumar Mishra
Research Scholer, Department of History,
Guru Ghasidas vishwavidyalaya, Bilaspur (c.g.)

Mahatma Gandhi was a great indian leader.he evolved the technique of satyagraha during his stay in south Africa.it was based on truth and non --violence.he was able to evolve his own style of leadership and politics.he relaised that sometimes leaders have to take unpopular decisions against the wish of their supporters.he combined some elements from indian tradition with the Christian requirement ofturning the cheek.after returning to india he decided to tour the country the next one year and see for himself the condition of the masses.its basic tenets were as follows-

A satyagrahi was not to submit to what he considered as wrong,but was to always remain truthful, non-violent and fearless.even while carrying out his struggle against the wrong-doer, a true satyagrahi would have no ill feeling for the wrong-doer, hatred would be alien to his nature.a satyagrahi works on the principles of withdrawal of cooperation and boycott.methods of satyagraha include non-payment of taxes,anddeclining honours and position of authority.he believe that only brave and strong could practice satyagraha, which was not for cowards and weak.even violence was preferred to cowardice.thought was never to be separated from practice.

KEY WORDS- satyagraha,boycott,non-violence.

गाँधी जी के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ. सुचि चौधरी
सहायक प्राध्यापक-मनोविज्ञान
डी.पी. विप्र महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

गाँधी जी कोई देवता या भगवान नहीं थे, बल्कि वह भी एक सामान्य व्यक्ति ही था, परन्तु उनकी असाधारण विचारधारा ने उन्हें महात्मा बना दिया। अपने विचारों से उन्होंने धर्म, साहित्य, आर्थिक जगत, सामाजिक स्थिति, मानवता, विश्वबंधुत्व जैसे अनेक क्षेत्रों को प्रभावित किया। उनके सत्य-अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय की भावना जैसे विचारों में जीवन के व्यवहारिक व नैतिक पक्षों को एकीकृत करने का भरपूर सामर्थ्य है।

वर्तमान समय में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता चमत्कारी ढंग से बढ़ रही है। देश में भौतिकतावाद, बाजारवाद, भ्रष्टाचार, दानवता, व्यक्ति प्रतिस्पर्धा जैसी कुरीतियाँ पनप रही है, ऐसे समय में गाँधी जी के विचारों को न केवल जानने व बताने की जरुरत है बल्कि उन्हें अपने व्यवहारिक जीवन में उतारने और अपनाने की आवश्यकता है, ताकि विश्व स्तर पर कुरीतियों को दूर किया जा सके। भारत देश गाँधी जी के पदचिन्हों पर चलते हुए अहिंसा का समर्थन करता है और भारत कभी भी युद्ध नहीं चाहता। वह हमेशा शांति व सह-अस्तित्व पर विश्वास करता है। हमारे

प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी ने अभी हाल ही में यू.एन.ए. के पटल पर अपने वक्तव्य में कहा कि ''भारत युद्ध को नहीं, बुद्ध को बढ़ावा देता है''।

अब तक हमने गाँधी जी को बहुत पढ़ा और सुना है, अब वक्त पढ़ने व सुनने का नहीं है वरन् अब समय आ गया है कि उनके विचारों को गढ़ा जाये, उसे कार्यरुप में परिणित किया जाये, तांकि मानवता का राज हो, विश्वबंधुत्व का निर्माण हो, शांति व्यवस्था हो और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामंजस्य स्थापित हो।

गाँधी जी के अहिंसा दर्शन की प्रासंगिकता

कु. श्वेता कुर्रे
योग प्रशिक्षक
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर

''अहिंसा परमो धर्मः'' जैन दर्शन का प्रमुख सूत्र है। इसका अर्थ है कि अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है। महात्मा गाँधी जी ने इसी सूत्र को अपने जीवन में चरितार्थ करने का प्रयास किया था। अहिंसा के सिद्धांत और ज्ञान के बारे में भगवद्गीता, रामायण, जैन दर्शन, बौद्ध दर्शन एवं योग दर्शन आदि ग्रंथों में भी वर्णन मिलता है। इन्हीं आध्यात्मिक स्रोतों के माध्यम से गाँधी जी ने अहिंसा को जीवन का व्यावहारिक रुप देने का प्रयास किया। 9 मार्च 1930 को यंग इंडिया के अंक में गाँधी जी ने लिखा था कि ''पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम है। इस प्रकार यह अहिंसा अपने क्रियात्मक रुप में सभी जीवधारियों के प्रति सद्भावना का नाम है, यह तो विशुद्ध प्रेम है।'' महात्मा गाँधी जी भगवद्गीता से अत्यंत प्रभावित थे। गीता आध्यात्मिक ग्रंथ है और यह जीवनोत्थान के लिए ज्ञान का भंडार है। गीता में अहिंसा की व्याख्या की गई हैं कि ''अहिंसा का अर्थ केवल हत्या न करना, कष्ट न पहुँचाना ही नहीं है, अपितु अपने दायित्वों का निर्वहन करना अथवा अपने कर्मो से विमुख न होना ही अहिंसा है।'' इसी से प्रेरित होकर गांधी जी ने कहा है कि ''अहिंसा का तात्पर्य अत्याचारी के प्रति नम्रतापूर्ण समर्पण नहीं है, वरन इसका तात्पर्य अत्याचारी की मनमानी इच्छा का आत्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध करना है।'' इसी सिद्धांत और गीता ज्ञान के आधार पर ही गाँधी जी ने स्वतंत्रता संग्राम के अनेक आंदोलनों में अहिंसात्मक लड़ाई लड़ने का पूर्ण प्रयास किया, और वे इसमें सफल भी हुए। उनके इस राजनैतिक जीवन मे अपनाये गये अहिंसा का प्रभाव न केवल भारत में अपितु अन्य राष्ट्रों में भी पड़ा। रुस, अमेरिका आदि विकसित राष्ट्रों ने महात्मा गाँधी के अहिंसा दर्शन से प्रभावित होकर ही उनके दर्शन को आत्मसात करने का प्रयास किया है। गाँधी जी के अहिंसा दर्शन के महत्व को समझ कर संयुक्त राष्ट्र संघ ने 02 अक्टूबर को अहिंसा दिवस घोषित किया है। गाँधी जी ने अहिंसा को स्पष्ट करते हुये अहिंसा की तीन अवस्थाएँ बतायी है - 1. जागृत अहिंसा, 2. औचित्यपूर्ण अहिंसा, 3. भीरुओं की अहिंसा। नैतिक धारणा रखने वाले मनुश्य जो समस्त गुणों एवं साधनों से संपन्न होते हुए भी हिंसा को नही अपनाते तथा किसी भी परिस्थिति में उनके आत्मविश्वास में कमी नही आती है, वह जागृत अहिंसा कहलाती है। औचित्यपूर्ण अहिंसा से तात्पर्य निष्क्रिय प्रतिरोध से है। वे मनुष्य जो निर्बल होते हैं किंतु ईमानदारी और बुद्धिमता से हिंसा को टालने का प्रयास करते हैं, वे औचित्यपूर्ण अहिंसा के अंतर्गत आते हैं। भीरुओं का अहिंसा के अंतर्गत डरपोक और कायर व्यक्ति आते हैं जो अहिंसा का मात्र दिखावा करते हैं। ऐसे लोग अहिंसा को बदनाम करते हैं। गाँधी जी कहते है ऐसे लोगों की अहिंसा को अहिंसा की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है।

समाज एवं सामाजिक विज्ञानो में स्वदेशी

डॉ स्नेहलता निर्मलकर
सहायकप्राध्यापक, शोधनिर्देशिका

सुश्री दया टोप्पो
पी-एच. डी (हिन्दी) शोधार्थी

डॉ सी.वी.रामन वि.वि. कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

महात्मा गाँधी जीवन भर सत्य की खोज करते रहे। जब से गाँधी जी ने होश संभाले थे वह सोते-जागते, उठते-बैठते, खाते-पीते सत्य की खोज ही करते रहे। गाँधी जी को भारतवासी राष्ट्रपिता कहते है। स्वदेशी की अवधारणा गाँधी जी के आर्थिक विचारो में एक प्रमुख धारणा है। इसका अर्थ विदेशी वस्तुओ का बहिष्कार मात्र नही है, और न ही देश में बनी वस्तुओं का प्रयोग मात्र है। स्वदेशी का अर्थ उस कर्तव्य से है जो हम अपने निकटतम पड़ोसी की ओर निभाते है यह वह तत्व है जो हमें निकटतम द्वारा बनायी गयी वस्तुओ व उनसे उपलब्ध सेवाओं तक सीमित करता है। वर्ष 1905 के बंग-भंग विरोधी जनजागरण से स्वदेशी आन्दोलन को बहुत बल मिला यह 1911 तक चला और गाँधी जी के भारत में पदार्पण के पूर्व सभी आन्दोलनों मे से एक था अरविन्द घोष, रबीन्द्रनाथ ठाकुर, वीर सावरकर, लोकमान्य तिलक और लाला लाजपत राय स्वदेशी आन्दोलन मे मुख्य उद्घोशक थे। लेकिन हमें यह भी समझना होगा कि देश में जो भी विकास अभी तक हुआ है, वह वास्तव में स्वदेशी के आधार पर ही हुआ है। कुल पूंजी निवेश मे विदेशी पूंजी का हिस्सा 2 प्रतिशत से भी कम है और वह भी गैर जरुरी क्षेत्रों में विदेशी पूंजी निवेश जाता है। लेकिन हमारे सभी क्षेत्रों में हमारी प्रगति किसी भी दृष्टिकोण से विदेशी निवेश और भूमंडलीकरण प्रगति नही, बल्कि हमारे वैज्ञानिकों और उत्कृष्ट मानव संसाधनों के कारण हो रही है। अभी भी समय है कि सरकार विदेशी निवेश के मोह को त्यागकर स्वदेशी यानी स्वदेशी संसाधन, स्वदेशी प्रौद्योगिकी और स्वदेशी मानव संसाधन के आधार पर विकास करने की मानसिकता अपनाएं।

दलित उद्धार एवम् महात्मा गाँधी

डॉ. बसंत कुमार सोनबेर
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान
शा.कमलादेवी राठी, महिला स्नात. महा. राजनांदगांव

डॉ. दीनू राम राना
इतिहास विभाग
शा.महा. डौंडीलोहारा, जिला बालोद

दलितों की जागृति और उद्धार का असली कार्य 1920-30 के दशक में आरम्भ हुआ। इस कार्य में सबसे महत्वपूर्ण योगदान महात्मा गाँधी का था। 1920 में जब असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और स्वराज्य का नारा लगाया गया, तो स्वाभाविक रुप से यह प्रश्न उठा, कि स्वतंत्र भारत का सामाजिक-आर्थिक संगठन कैसा होगा। पुरानी व्यवस्था को बनाएँ रखना न सम्भव था और न वांछिनीय। अन्य समस्याओं के साथ गाँधी जी का ध्यान दलित वर्गों की स्थिति की ओर गया। उन्नसवीं शताब्दी के सुधार-आन्दोलन के अनुकूल वातावरण तैयार कर दिया था और दलितों में भी जागृति आने लगी थी। गाँधी जी ने अस्पृश्यता हिन्दू धर्म और संस्कृति पर कलंक है और मनुष्य तथा ईश्वर दोनों के प्रति घोर पाप है। उनका कहना था कि सामाजिक जीवन में अस्पृश्या का समान दर्जा दिया जाय और हिन्दुओं को मंदिरों में प्रवेश दिया जाय। असहयोग आन्दोलन के स्थगित होने के बाद के वर्षो में उन्होंने अपना सारा समय और शक्ति रचनात्मक कार्यो में लगायी जिनमें दलितोद्धार का कार्य प्रमुख था।

महात्मा गाँधी एक महान समाज सुधारक थे। वे आदर्श समाज की स्थापना में विश्वास करते थे। गाँधी जी का ध्येय समाज का सुधार करना था और समाज सुधार का सबसे महान कार्य हरिजनोद्धार था। छुआछूत या अस्पृश्ता की भावना समाज में इतनी अधिक व्याप्त हो गई थी, कि इसने राष्ट्रीय समस्या का स्वरुप धारण कर लिया था। इस ओर गाँधी जी का विशेष ध्यान गया और उन्होंने राष्ट्र के पुननिर्माण के लिए हरिजनोद्धार का बीड़ा उठाया। स्वयं को सनातन हिन्दू मानते हुए उन्होंने हिन्दुओं के साथ-साथ गैर हिन्दुओं के प्रति भी समता का भाव रखा। वे आदर्श समाज की स्थापना में विश्वास रखते थे। समाज में ऊँच-नीच, छुआछूत के लिए कोई स्थान वे नहीं चाहते थे। वे मानते थे कि धर्म के आधार पर कोई वर्ण नहीं बना हुआ है, इसी कारण वे प्रायः हरिजन बस्ती में समय अवश्य देते थे। वही प्रार्थना सभाएं आयोजित करते थे। उनका विश्वास था कि जब देश में अछूत वर्ग का उत्थान नहीं होगा, तब तक देश का विकास नहीं हो सकता।

गांधी जी का शिक्षा दर्शन

डॉ. दुर्गावती भारतीय
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास.महा.व.स्ना.महा., महासमुंद

महात्मा गाँधी आधुनिक युग के राजनीतिक विचारको में अद्वितीय स्थान रखते हैं उन्होनें अपने सम्पूर्ण जीवन में राजनीतिक विषय पर किसी ग्रन्थ की रचना नहीं की। परन्तु फिर भी उनके विचारों ने भारतीय राजनीतिक जीवन को ही नया मोड और गतिप्रदान नहीं की वरन् सम्पूर्ण एशिया के जागरण के अग्रदूत बनकर प्रस्फुटित हुए। गाँधी जी एक कर्मयोगी और क्रियाशील राजनीति शास्त्री थे उनके सम्मुख जो भी समस्यायें आती थीं, उनके समाधान के लिये वे तत्पर रहते थे। गाँधी जी राजनीति के साथ-साथ शिक्षा पर अपनी स्पष्ट राय रखते थे। भारतीय शिक्षा नीति का उन्हें प्रणेता माना जाता है। गाँधी जी का शिक्षा के प्रति नवीन दृष्टिकोण उनकी प्रबल सोच को सामने रखती है। गाँधी जी ने अंग्रेजों द्वारा विकसित शिक्षा पद्धति की तीन महत्वपूर्ण कमियां बताई-1. यह विदेशी संस्कृति पर आधारित है 2. यह हृदय और हाथ की संस्कृति की उपेक्षा कर पूर्णतः दिमाग तक ही सीमित रहती है। 3. विदेशी भाषा के माध्यम से सही शिक्षा संभव नहीं है।

गाँधी ने अंग्रेजी शिक्षा को मानसिक गुलामी का कारण बताया है। वे कहते है -''अंग्रेजी शिक्षा लेकर अपने राष्ट्र को गुलाम बनाना चाहते थे। वे व्यक्ति, समाज और देश की राजनैतिक आर्थिक एवं सामाजिक दासता का विरोध कर स्वावलम्बन के आकांक्षी थे। अतः शिक्षा को वे सार्वभौमिक रुप में प्रसारित करना चाहते थे कि शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क हृदय तथा आत्मा की सारी शक्तियां पूर्ण रुप से विकसित हो। नए भारत का निर्माण श्रम के प्रति निष्ठा एवं संतुलित दृष्टिकोण वाले व्यक्तियों से ही हो सकती है। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा आदर्शवाद एवं प्रयोजनवाद के रुप में होना चाहिए जो सैध्दान्तिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक शिक्षा भी दे सके। शिक्षा वह है जो ज्ञान प्राप्त करने के साथ उसके व्यवहार में परिवर्तन लाये। शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिससे भारतीय समाज विकास कर सकता है। गाँधी जी के अनुसार-''शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक तथा मनुष्य के शारीरिक, मानसिक तथा आत्मा के भीतर विद्मान गुणों का सब प्रकार से सर्वोत्तम विकास करना है।''

गाँधी जी का अर्थ दर्शन

डॉ. वैशाली गौतम हिरवे
सहायक प्राध्यापक मनोविज्ञान
शा.महा.वल्ल.स्नात.महाविद्यालय

आज का समय तीव्र गति से परिवर्तनशील है। मानव जीवन का प्रत्येक पक्ष निरंतर परिवर्तित हो रहा है, इसमें आर्थिक नैतिक, सामाजिक आदि विभिन्न पक्ष सम्मिलित है। इस बदलते समय में गाँधी जी के विचारों की प्रासंगिकता ही अपरिवर्तनीय है। उनके विचार जीवन के विभिन्न पक्षों में आज भी उपयोगी है। आर्थिक जीवन के पहलू पर अनेक विचार आज भी प्रासंगिक है। महात्मा गाँधी जी ने कहा है कि अर्थ और नैतिक पक्ष एक-दूसरे के पूरक है, अर्थात आर्थिक प्रतिस्पर्धा में हमें अपनी नैतिकता नहीं भूलना चाहिए क्योकि प्रकृति के नियम पूर्ण सत्य हैं। परंतु आर्थिक नियम समय व स्थान के अनुसार बदलतें रहते हैं।

आर्थिक मूल्यों एवं जीवन से संबंधित गाँधी जी के प्रमुख विचार -

(1) विकेंद्रीकृत उद्योगों के पक्षकार- गाँधी जी विकेंद्रीकृत उद्योंगो के पक्षकार थे। वे तकनीक के अधिक प्रयोग के विरोधी थे। उनका मानना था कि भारत श्रमिक धनी देश है अतः हमें श्रमिक प्रधान उद्योग स्थापित करना चाहिए।

(2) बेरोजगारी का विकल्प खादी ग्राम उद्योग- गाँधी जी मानते थे कि खादी वस्त्र नही एक विचार है। इसे सभी धारण करने लगे तो यह प्रभावी आर्थिक उपकरण के रुप कार्य करने लगेगा। इसमें उपयोग होने वाला चरखा कम पूंजी पर उपयोग किया जा सकता है।

(3) कुटीर उद्योंगो को बढ़ावा- गाँधी जी कुटीर उद्योगों के प्रबल पक्षधर थे। उनके अनुसार हर घर उत्पादन की इकाई के रुप में कार्य करना चाहिए। जिससे हर घर आत्मनिर्भर हो सकेगा। गाँधी जी ना तो भौतिक समृद्धि के विरुद्ध थें ना ही उन्होंने सभी परिस्थितियों में मशीनों के उपयोग को नकारा है। मशीनों से सभी के समय और श्रम में बचत होनी चाहिए। वे नहीं चाहते थे कि मनुष्य मशीनों का दास बनकर रह जाए।

(4) स्वदेशी का उपयोग- आर्थिक क्षेत्र में स्वदेशी का अर्थ विकेन्द्रित उत्पादन है। दूसरे शब्दों में प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न क्षेत्रों को आत्म निर्भर रहना चाहिए। गांव जरुरतों के लिए हमें एक दूसरे पर निर्भर रहना चाहिए। इस प्रकार स्वदेशी में स्वावलंबन एवं परावलंबन दोनों ही आ जाते हैं।

गाँधी जी ने कहा था - ''आर्थिक समानता अहिंसक स्वतंत्रता की असली चाबी है। शासन की अहिंसक प्रणाली कायम करना तब तक संभंव नही है जब तक संभंव नहीं है जब तक अमीरों और करोडों भूखें लोगों के बीच की खाई बनी रहेगी।''

गाँधी जी का ग्राम - स्वराज्य

डॉ. देवेन्द्र कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय, मस्तूरी जिला - बिलासपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज्य की कल्पना ठोस आर्थिक सिद्धान्तों पर आधारित है। वह न केवल व्यावहारिक है वरन भारतीय संस्कृति , पराम्परा एवं परिस्थितियों के अनुकूल है। वैसे उनका सम्यक आर्थिक दर्शन एक शोषणरहित, आत्मनिर्भर एवं विकेन्द्रित अर्थव्यवस्था की भावना से उत्प्रेरित है जिसमें ग्रामीण विकास का लक्ष्य सर्वोपरि है। गाँधी जी कोई सैद्धांन्तिक अर्थशास्त्री नही थें। लेकिन वे एक भविष्यदृष्टा, आर्थिक विचारक अवश्य थे। उन्होंने भारतीय ग्रामीण जीवन को स्वयं देखा, परखा, चिंतन किया और तदुपरान्त ग्रामीण विकास हेतु अपने विचार प्रकट किये।

गाँधी जी द्वारा ग्रामों के विकास व ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रस्तुत कार्य क्रमों में प्रमुख हो चरखा एवं करघा, ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग, सहकारी खेती, ग्राम पंचायत, सहकारी संस्थायें, राजनीति एवं आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण, अस्पृश्यता निवारण, मघ निषेध बुनियादी शिक्षा आदि है।

गाँधी जी का दृढ़ मत था कि जब तक ग्रामों में घोर गरीबी से त्रस्त लोगों की दयनीय दशा में परिवर्तन लाकर उनके जीवन स्तर में सुधार नहीं किया जाता तब तक न तो भारत की स्वतंत्रता का कोई अर्थ होगा और न इसकी प्रगति का स्वप्न पुरा होगा।

बिलासपुर जिले के पू.मा.शालाओं के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. संजीत कुमार तिवारी
प्राध्यापक (शिक्षा) शोध निर्देशक

राजकुमार सिंह
पी.एच.डी. शोधार्थी

स्कूल आफ एजुकेशन मैट्स विश्वविद्यालय रायपुर

शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जो व्यक्ति को पशुत्व से देवत्व की ओर ले जाती है पशुत्व में संकीर्णता तथा देवत्व में विशदता निहित होती है। शिक्षा व्यक्ति को वास्तविक शक्ति से सम्पन्न बनाती है। मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध है। प्रस्तुत अध्ययन में बिलासपुर जिले के पू.मा.शालाओं के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इसके लिए न्यादर्श के रूप में छ.ग.के बिलासपुर जिले में स्थित पू.मा.शालाओं के 200 छात्रों का चयन किया गया है। मापन हेतु मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम से ज्ञात होता है कि यदि छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा होगा तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी अच्छी होगी।

नारी सशक्तीकरण और गाँधी जी

डॉ शालिनी वर्मा

महात्मा गाँधी जी का यह उद्धरण कि ''अबला पुकारना महिलाओं की आंतरिक शक्ति को दुत्कारना है'' महिलाओं के प्रति गाँधी जी के सकारात्मक दृष्टिकोण यही दर्शाते है कि वे महिलाओं को पुरुष के मुकाबले अधिक सुदृढ़ मानते थे उनका मानना था कि यदि महिलायें देश की गरिमा बढ़ाने संकल्परत हो जाये तो वह दिन दूर नहीं जब देश का स्वरुप बदल जायेगा। इक्कीसवीं सदी में गाँधी जी की यही परिकल्पना चरितार्थ हो रही है इसका जीता-जागता सबूत मंगलमिशन, चन्द्रयान जैसे अभियान में महिलाओं की भागीदारी से लगाया जा सकता है यही नहीं आज भारत में कोई भी क्षेत्र देखे सभी जगह महिलाओं की भूमिका क्रांतिकारी प्रतीत होती है। गाँधी जी की सहिष्णुतावादी दृष्टिकोण से ही स्वतंत्रतापूर्व आंदोलनों में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया और सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक व राजनीतिक उत्थान के कार्यक्रम भी चलाए। महिला अधिकारों के संबंध में आज जो अनुकूल वातावरण हमें दिखाई दे रहा है, उनकी नींव गाँधी जी ने बहुत पहले रख दी थी। महिलाओं के लिए उनके मन में गहरी सहानुभूति और आदर का भाव मौजूद था।

नारी सशक्तिकरण को बढ़ावा देने उन्होंने महिलाओं को न केवल स्वतंत्रता संघर्ष में कुदने के लिए प्रेरित किया, बल्कि उन्हें नेतृत्व करने का भी अवसर दिया। स्वाधीनता संघर्ष के इतिहास में सरोजनी नायडू, विजय लक्ष्मी पंडित, इंदिरा गांधी, सुचेता कष्पालानी, सुशीला नैय्यर, अरुण आसफ अली आदि महिलाओं का सशक्त योगदान स्वर्णिम है। गांधीजी के नम्र व्यवहार व स्नेह से ना केवल भारतीय महिलाये प्रभावित हुई बल्कि विदेशी महिलाओं पर भी इसकी गहरी छाप दिखाई देती है। सरला बेन, मीरा बेन जैसी महिलाओं न केवल अपना देश छोड़ा बल्कि भारतीय नाम व जीवन पद्धति अपनाकर रचनात्मक कार्यो में सक्रिय भूमिका भी निभाई।

महात्मा गाँधी की भाषा नीति

डॉ. सरिता पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक हिन्दी (विभागाध्यक्ष)
शा. महाविद्यालय हसौद जिला जांजगीर-चाम्पा

महात्मा गाँधी जी भाषा वैज्ञानिक नहीं थे, फिर भी वे भारत की भाषा समस्या पर अपना विचार व्यक्त करते हुए कहते है कि हिन्दी देश की राष्ट्र भाषा है। और उन्होंने इसका विकास हिन्दुस्तानी की रुप में बताया है। हिन्दी का इतिहास देखा जाये तो पता चलता है कि वह अनेक कालो में अनेक नामों से पुकारी गई है। जायसी ने अपने महा काव्य पद्मावत में उसे 'भाखा' कहा है तो सरहपा के जमाने में भी इसे 'भाखा' ही कहा जाता था। इसे हिन्दुई, हिन्दवी, रेख्ता खड़ी बोली और हिन्दुस्तानी भी कहा गया है। गाँधी जी हिन्दुस्तानी के समर्थक थे। हिन्दुस्तानी से महात्मा गाँधी का आशय उस भाषा से था जिसमें हिन्दी और उर्दू के अनेक तत्वों का मिश्रण हों। गाँधी जी हिन्दी और उर्दू को मिलाकर एक संयुक्त भाषा का नाम हिन्दुस्तानी देते है। वे मानते थे कि हिन्दुस्तानी देवनागरी लिपि और अरबी लिपि दोनो में लिखी

जा सकती है। उनके ऐसा सोचने का आधार यह था कि हिन्दी और उर्दू बोल चाल की स्तर पर आम हिन्दूस्तानी और समान्य जनता के लिये बोल चाल के स्तर पर लगभग ऐक जैसा ही है। अंतर है तो सिर्फ इतना ही कि हिन्दी वाले संस्कृत शब्दों को और उर्दू वाले फारसी अरबी शब्दों को अपने बोलचाल में सामिल कर देते है। जबकि दोनो खड़ी बोली ही बोलते है। गाँधी जी मानते थे कि जब हिन्दू और मुसलमान भारत की बहुसंख्यक जनता मिली जूली भाषा बोलते है तो उसे हिन्दूस्तानी नाम दिया जा सकता है। क्यों कि इसे दोनों लिपि नागरी और अरबी में लिखी जा सकती है। गाँधी जी दो लिपि के पक्षधर थे, जिसे हमारे भाषा वैज्ञानिकों ने आपत्ति कर अमान्य कर दिया था। और कहा गया कि भाषा की एक लिपि ही हो सकती है। इस तर्क से हिन्दुस्तानी की लिपि देवनागरी ही है। जिस काल विशेष में हिन्दुस्तानी कहने का चलन बढ़ा, वह हिन्दी ही था। स्वयं उर्दू का जन्म हिन्दी प्रदेशों जैसे पंजाब, सिंघ, कश्मीर, दक्षिण भारत के कुछ तेलगू रियासतो में प्रचलन होने के कारण उसे दक्खनी या तकनी नाम मिला। जिसपर हिन्दी और उर्दू प्रेमी दोनों अपना दावा करते है। यह भी कहा जा सकता है कि महात्मा गाँधी एक भाषा वैज्ञानिक नहीं थे, इसी लिये उनकी हिन्दूस्तानी की वकालत अवैज्ञानिक व अव्यवहारिक घोषित कर दिया गया।

वैसे देखा जाय तो, हिन्दूस्तानी केवल महात्मा गाँधी का आविष्कार नहीं है क्यों कि उनसे पहले 19 वी शताब्दी के उत्तरार्ध में राजा शिव प्रसाद सितारे 'हिन्द' ऐसी मिली जुली मिश्रित हिन्दी के लिये आंदोलन कर चुके थें। जिसे उन्होने हिन्दुस्तानी नाम दिया था।

गाँधी जी और नारी सशक्तीकरण

डॉ. सुनीता राठौर
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शा. एम.एम. आर. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चाँम्पा

गाँधी जी नारी को साहसी, त्यागशील, निर्भीक और सशक्त मानते थे। सशक्तीकरण का अर्थ है - बैठक या बाहर काम करने के लिये सक्षम होना, और स्पष्ट रुप से कहकर या माँगें रखकर 'समस्याओं का समाधान करना।'

गाँधी जी महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले अधिक सुदृढ़ और सहृदय मानते थे। वे नारी को अबला कहने के भी सख्त खिलाफ थे। इस संदर्भ में महात्मा गाँधी का यह उध्दरण जानने योग्य है - ''उन्हे अबला पुकारना महिलाओं की आंतरिक शक्ति को दुत्कारना है। यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो हमें उनकी वीरता की कई मिसालें मिलेंगी। यदि महिलायें देश की गरिमा बढ़ाने का संकल्प कर ले तो कुछ ही महीनों में वे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति के बल पर देश का रुख बदल सकती है।''

सामान्यतः महात्मा गाँधी को धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक मामलों में परंपरावादी तथा अनुदार माना जाता है। वे नारी को पुरुषों से किसी भी बात में कम नहीं आंकते थे और सहिष्णुता जैसे मामलों मे तो औरतो को पुरुषों से अधिक समर्थ और सक्षम मानते थे। यही कारण है कि उन्होने कांग्रेस में महिलाओं को नेतृत्व का पूरा अवसर दिया। विभिन्न आंदोलनो में महिलाओं को शरीक करने के साथ-साथ उनके सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक उत्थान के कार्यक्रम भी चलाये। उल्लेखनीय बात यह है कि नारी मुक्ति का शोर मचाने के बजाय उन्होंने महिलाओं को एकदम सहज ढ़ग से स्वतंत्रता आंदोलन का अभिन्न अंग बनाया।

GANDHI ON EDUCATION

DR. OORJA RANJAN SINHA
Assistant Professor of English
D. P. Vipra Mahaviyalaya, BILASPUR (CHHATTISGARH)

Gandhi was neither an educationist nor an academician. His mother tongue was Gujarati, he knew Hindi fairly well and the language of his profession was English. During the days of the freedom struggle under his leadership he had to think of the various ways to unite the people of India so that they could fight the British as one force and one nation. Hindi was the language of a large population and even those whose mother tongue was not Hindi could speak, or at least understand, this language. Gandhi used Hindi for his speeches and conversations and also for writing along with Hindi. Gandhi's way of working for anything was dominated by the thought that it should bring people together, create in them the feeling of togetherness and unity— rather the feeling of identity. He had a large following of the people who were poor and uneducated because he identified himself with them following their life style: for example, he travelled in third class railway compartment, wore just one piece of clothing, a dhoti without a kurta, and that too up to the knee only. Education for the uneducated lower class was his priority, and therefore he laid emphasis on basic education.

The central idea of basic education, according to him, is an all-round development of the child— cultivation of moral virtues, sense of national pride, self confidence, self-reliance, self—discipline, earning while learning, rejection of English education, learning through the mother tongue, etc. Some points may be contended, but accepted with modification. Early education in English and the psychology behind English education may be criticized but the role of English in education may not be undermined.

गाँधी जी का राष्ट्रभाषा हिंदी प्रेम

डॉ. प्रदीप कुमार निर्णेजक
व्याख्याता
शा. उ. मा. वि. लिमतरी बिल्हा, बिलासपुर छ.ग.

महात्मा गाँधी जी को राष्ट्रभाषा हिंदी से अत्यधिक प्रेम था। वे हिंदी को जन-जन तक पहुंचाना चाहते थे। गाँधी जी जानते थे कि जिन राज्यों का मातृभाषा अलग है फिर भी वे हिंदी जानते व समझते हैं। हर एक पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी को अपनी भाषा का पर गर्व है। हिंदू को संस्कृत का, मुसलमान को अरबी का, पारसी को पार्शियन का और सबको हिंदी का ज्ञान होना चाहिए। गाँधी जी चाहते थे कि सारे हिन्दुस्तान के लिए एक भाषा हिंदी ही होनी चाहिए। प्रश्न उठता है क्या अंग्रेजी राष्ट्रीय भाषा हो सकती है ? आज अंग्रेजी घरों तक पहुंच रहा है। श्रीमती एनी बेसेन्ट भी चाहती है कि अंग्रेजी राष्ट्रभाषा बने। इसे बहुत से स्वादेशाभिमानी विद्वान कहते हैं कि अंग्रेजी को राष्ट्रीय भाषा होनी

चाहिए क्योंकि दिन ब दिन अंग्रेजी का फैलाव हो रहा है। तब गाँधी जी ने इसका विरोध किया और कहा कि राष्ट्रीय भाषा में क्या-क्या लक्षण होना चाहिए।

1. आम लोगों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।
2. उस भाशा के द्वारा भारतवर्ष का धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।
3. यह जरुरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।
4. राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।
5. उस भाषा का विचार करते समय क्षणिक या अल्प-स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

गाँधी जी का कहना था कि ये लक्षण अंग्रेजी में सर्वथा नहीं है। अतः हम अंग्रेजी को देश की राष्ट्रभाषा नहीं बना सकते मगर हिंदी जन-जन की भाषा है। पूरा देश हिंदी में व्यव्हार करते हैं। हिंदी सरल है। हिंदी से भाव का बोध भी आसानी से हो जाता है और इसे दो-तीन महिनों में आसानी से सीखा जा सकता है। कुछ एक राज्यों में हिंदी नहीं बोली जाती किन्तु वहां भी हम हिंदी का प्रचार-प्रसार करेंगे ऐसे राज्यों में तमिलनाडु और बंगाल है जहां स्थानीय बोली अत्यधिक व्यवहार में है। इन राज्यों में हिंदी के प्रचार व प्रसार के लिए हिंदी साहित्य सम्मेलन की स्थापना की गई जो अहिंदी भाषी राज्यों में हिंदी का प्रचार करेगी। इसके लिए गाँधी जी ने फंड की भी व्यवस्था की ताकि हिंदी का प्रचार-प्रसार न रुके और हिंदी जनसाधारण तक आसानी से पहुंचे।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन

कमलेश ठक्कर
सहायक प्राध्यापक, भौतिक शास्त्र विभाग

मंजरी शर्मा
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान विभाग

शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, बिलासपुर

भारतीय इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई का मूल नेतृत्व महात्मा गाँधी द्वारा किया गया है, राष्ट्र ने उन्हें राष्ट्रपिता कहकर अपनी कृतज्ञता प्रकट की। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। वे प्रयोजनवादी विचारधारा के समर्थक थे विश्व के समस्त लोग उन्हें एक महान राजनितिज्ञ एवं समाज सुधारक के रुप में ही जानते हैं, परंतु उनका सपना राष्ट्र की राजनितिक स्वाधीनता तक सीमित नही था बल्कि शैक्षिक, आध्यात्मिक, नैतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में भारत देश की परंपराओं को नवीन रुप देकर एक स्वस्थ्य एवं शिक्षित भारत का निर्माण करना था।

गाँधी जी शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण कार्य किए है। गाँधी जी का विचार था कि शिक्षा के बगैर समाज व देश की उन्नति की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। गाँधी जी का मुख्य उद्देश्य एक शोषण विहीन समाज की स्थापना करना था, उसके लिए समाज के सभी व्यक्तियों का शिक्षित होना अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ्य समाज का निर्माण असंभव होता है। अतः गाँधी जी ने शिक्षा के नवीन एवं बेहतर सिद्धांतों तथा महत्वपूर्ण उद्देश्यों की व्याख्या करते हुए प्रारंभिक शिक्षा योजना को ही अपने शिक्षा दर्शन का मूर्त रुप माना था। गाँधी जी के इसी शिक्षा दर्शन के कारण उन्हें एक अच्छे शिक्षा शास्त्री के रुप में भी जाना जाता है। गाँधी जी का मानना था कि भारत में बच्चों को 3H की शिक्षा अर्थात Head, Hand, Heart की शिक्षा दी जानी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो

समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वावलंबी बना सके और देष की नींव को मजबूती प्रदान कर सके। उन्होनें अक्षर ज्ञान की तुलना में हस्त शिक्षा को प्राथमिकता दिया और कहा कि भारत देश में बुद्धि पूर्वक किया जाना वाला श्रम ही सच्ची प्राथमिक शिक्षा है। स्पष्टतः गाँधी जी की शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि या मस्तिष्क के विकास तक सीमित नही था, वे उसे एक संपूर्ण साधना पद्धति के रुप में चलाना चाहते थे, जो मनुष्य के शारिरिक, मानसिक, आर्थिक विकास के साथ-साथ उसके आध्यात्मिक उन्नति में भी सहायक सिद्ध हों।

गाँधी जी भारत में एक ऐसी शिक्षा नीति का प्रार्दुभाव करना चाहते थे जिससे भारत की भारत के रुप में ही अस्मिता बनी रहे। इस हेतु गाँधी जी ने विष्व की समस्त संस्कृतियों एवं सभ्यताओं के परस्पर प्रभाव के महत्व को तो स्वीकार किया, परंतु भारत की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक पहचान को कायम रखने के लिए प्राथमिक शिक्षा को ही महत्वपूर्ण बतलाया।

गाँधी जी का अध्यात्म

नम्रता पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक हिंदी
शास. अवंती बाई लोधी नवीन महाविद्यालय परपोड़ी, जिला-बेमेतरा

मोहनदास करमचंद गाँधी जिन्हे संपूर्ण विश्व महात्मा गाँधी के नाम से जानता है। जिनका नाम लेते ही हम सत्य और अहिंसा का सिद्धांत याद आता है। इस वर्ष 2 अक्टूबर को महात्मा गाँधी की 150 वी जयंती मनाई गई। 2 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा ''विश्व अहिंसा दिवस'' के रुप में मान्यता दी गई है जिसका अर्थ है कि उनका अहिंसा का यह दर्शन संपूर्ण विश्व के लिए उपयोगी है इसके साथ ही यह संपूर्ण विश्व में गाँधी जी के सिद्धांतों की मान्यता व सम्मान को भी दर्शाता है।

महात्मा गाँधी के जीवन पर धर्म व अध्यात्म का गहन प्रभाव था। वे श्रीमद् भागवत गीता का अध्ययन करते थे। वे गीता के उपदेशों से अत्यंत प्रभावित थे। उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य सत्य की खोज को बताया। अपने आत्मकथा ''मेरे सत्य के साथ प्रयोग'' में अपनी सोच व विचार को व्यक्त किया। उन्होंने पहले ईश्वर को सत्य कहा लेकिन बाद में अपने इस कथन को बदलकर ''सत्य ही ईश्वर कहा'' और ईश्वर के नाम सच्चिदानंद को सही बताया। वे कहते हैं ''मेरा धर्म सत्य और अहिंसा पर आधारित है, सत्य मेरा भगवान है और अहिंसा उसे पाने का साधन है''। सत्य के मार्ग को अपनाते हुए ही गाँधी जी ने सत्याग्रह की नींव रखी। गाँधी जी के लिए अध्यात्म कोई एकांत साधना नही थी। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति मानवीय गरिमा से जिए और सबकी सुख-दुःख में परस्पर सहभागिता हो, जात-पात, ऊँच-नीच, छुआ-छुत की दीवारें ढह जाएँ यही उनका अध्यात्म था। गाँधी जी भगवद् गीता को अपना पथ प्रदर्शक एवं अध्यात्मिक निर्देश ग्रंथ मानते थे। गाँधी जी का कहना था मानव जीवन ज्ञान भक्ति और कर्म का समन्वय है और गीता इससे संबंधित समस्त समस्याओं का निवारण करती है। वे मानते थे कि जो मनुष्य गीता का भक्त होता है उसे कभी निराशा नहीं घेरती वह सदैव आनंद में डूबा रहता है।

गाँधी जी बौद्ध, जैन, इसाई धर्म से अत्यधिक प्रभावित थे। महात्मा गाँधी ने लोक-कल्याण, सेवाभाव और सभी धर्म के प्रति उदारता के जरिए अध्यात्म की पहचान की। वर्तमान समय में दुनिया में व्याप्त हिंसा, भ्रष्टाचार आतंकवाद जैसे समकालीन मुल्कों के लिए गांधीवाद मूल्य आज भी प्रासंगिक है। सत्य, अहिंसा और शांति के राह पर चलने की

गाँधीवादी सोच पर ही मानव समाज का कल्याण संभव हो। गाँधी जी ने कहा ''लाखों करोड़ों गूंगों के उदय में जो ईश्वर विराजमान है मैं उसके सिवा अन्य किसी ईश्वर को नही मानता'' गाँधी जी ने ईश्वर की सेवा को मानव सेवा से जोड़ा। उनका यह मानना था कि स्वयं को जानने का सर्वश्रेष्ठ तरीका स्वयं को दूसरों की सेवा में डूबा देना। गाँधी से प्रभावित अल्बर्ट आइंसटीन ने कहा था ''आने वाली पीढ़ी शायद ही यह विश्वास कर सकेगी गाँधी जैसा हाड़-मांस का पुतला कभी इस धरती पर पैदा हुआ था''। गाँधीवाद मूल्य और सिद्धांत संपूर्ण विश्व के लिए आज भी प्रासंगिक है। उनकी सोच धर्म, राजनीति, समाज के साथ ही जीवन के प्रत्येक पहलू पर एक स्वस्थ विचार के रुप में उपस्थित है।

गांधीजी के लिए मानवधिकार की संकल्पना

डॉ. संगीता श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक
मनसा शिक्षा महाविद्यालय

मानव के लिए अधिकार एवं कर्त्तव्य समाज में उसकी गरिमा और प्रतिष्ठा के लिए मानव जिम्मेदार माने जाते है। इन्हीं अधिकारों और कर्त्तव्य को म`नजर रखते हुए विभिन्न समाज सुधारकों ने तन-मन-धन मानव अधिकारों की रक्षा में न्यौछावर का विश्वबन्धुत्व पर विशेष बल दिया जिनमें महात्मा गाँधी, राजा राममोहन राय, अब्राहम लिंकन, मदर टेरेसा, नेल्सन मंडेला के नाम प्रमुख रुप से उल्लेखनीय हैं। मानव अधिकारों के हक में लड़ी जाने वाली इस लड़ाई की शुरुआत हाड़-मांस के एक सामान्य से दिखने वाले इंसान ने दक्षिण अफ्रिका में रेलगाड़ी में सफर के दौरान की और अपनी अन्तिम सांस तक इस लड़ाई को जारी रखा। आगे चलकर वही व्यक्ति जन-जन की चेतना बन महात्मा गाँधी के नाम से प्रसिद्ध हुए। समाज को बदलने के लिए गाँधी ने स्वयं को बदल दिया था। अहिंसा को उन्होंने बुनियादी जीवन का मूल्य माना। सत्य को एक अस्त्र के रुप में प्रयोग किया है जिसका वार कभी निष्फल नहीं होता।

विश्व के विभिन्न मनीषियों, समाज सुधारकों ने एक स्वर में इस बात को स्वीकार किया कि '' गाँधी के बिना मानवधिकार की संकल्पना अधूरी रह जाती है। मानवधिकार की पृष्ठभूमि गाँधी की दृष्टि और दर्शन का ही परिणाम हैं।

गाँधी जी और नारी सशक्तिकरण

ऋतु सिंह
योग अनुदेशक
पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जिनका जन्म 02 अक्टूबर 1869 को पोरबंदर में हुआ, जिनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गाँधी था। गाँधी जी भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। इनकी पत्नि कस्तुरबा गाँधी थी जिनसे इनका विवाह हुआ। गाँधी जी को उनके प्रियजनों ने राष्ट्रपिता, महात्मा, बापू, गाँधी जी इन नामों द्वारा भी संबोधित किया। इनकी शिक्षा UCL Faculty of Laws (1888-1891) अल्फ्रेड हाई स्कूल, राजकोट (1887) से हुई, इनकी मष्यु 30 जनवरी 1948 को नई दिल्ली में हुई।

महात्मा गाँधी की विशेषता उनके कालजीवी होने में है। उनके विचार उनकी देषकाल की समीक्षा की देन है। यही कारण है आज परिस्थितियों की जटिलता ने गाँधी जी को अत्यंत प्रासंगिक बना दिया है। अब लगने लगा है विश्व में शांति प्रक्रिया स्थापित करने में गाँधीवादी विचारों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। गाँधी जी ने अपने समय की वर्चस्ववादी शक्तियों का प्रतिरोध किया था। आज आवश्यकता इसी प्रकार के प्रतिरोध करने की है। इसी संदर्भ में गाँधी जी महिलाओं की आर्थिक स्थिति में बदलाव करने के बजाय इनकी नैतिक स्थिति में बदलाव लाकर उनकी वास्तविक स्थिति को बदलने का प्रयास किया।

गाँधी जी का समाज दर्शन एवं चिंतन शैली

प्रो. पदमा अग्रवाल
मनसा शिक्षा महाविद्यालय
कुरुद भिलाई दुर्ग (छ.ग.)

नम्रता पांडे
शोधार्थी
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग (छ.ग.)

मानववादी मूल्यों के प्रतिष्ठापक महात्मा गाँधी आधुनिक भारत के जनक है, राष्ट्रीय आंदोलनो के तीन दशको तक हमे उनके प्रेरक मार्गदर्शक सकल नेतष्त्व एवं मानववादी जीवन-मूल्यों का श्रेय मिलता रहा है आपके समाज दर्शन को पूरे विश्व मे 'सत्याग्रह' गाँधी चिंतन का प्रथम आविष्कार माना गया हैं, आपने अपने दर्शन में अद्भुत एवं प्रतिष्ठा को विशेष महत्व प्रदान किया आपकी चिन्तन शैली पशु-बल के लिए एक चुनौती था आपका दर्शन विशुद्ध धर्म-प्रेरित था, वह धर्म भी मानव सेवा एवं मानव कल्याण से अभिप्रेत था। गाँधी जी की आत्मकथा का नाम भी 'सत्य' के प्रयोग है। गाँधी जी की धारणा थी कि विषक्त ही हिंसा की जननी है। यदि हिंसा को रोकना हा और अहिंसा एवं शान्ति की स्थापना करनी हो तो सामाजिक आर्थिक अभाव, असमानता को जड़ से उखाड़ना होगा, एवं समाज-व्यवस्था को बदलना होगा तभी परिवर्तन हो सकता है, जो मानव को सुखी बना सके। मूल्यों कि रक्षा के लिए समाज में बदलाव एवं सुसंस्कृत समाज की प्रतिष्ठा ही गाँधी-चिंतन है। जीवन में यर्थाथ का सामना करना, सभी चुनौतियों को स्वीकार करना गाँधी जी का मुख्य चिंतन है आपका मानना था, लोकतंत्र स्वाभाविक रुप में उसी को प्राप्त होना है, जो साधारण रुप से अपने को मानते है, तथा दैवी सभी नियमों का स्वेच्छापूर्वक पालन करने में अभ्यस्त बना ले। समाज में मौजुद प्रत्येक वर्ग के लोगों की अंतर्निहित संभावनाओं को अभियक्ति मिले और उनकी आवश्यकता की पूर्ति की जा सके। सामाजिक न्याय के लिए लड़ाई अहिंसा में लड़ी जाए, इसलिए नैतिक गुणों के विकास को जरुरी माना। उनका पूर्ण विश्वास था कि भारत के लोगों के लिए स्वतंत्र एवं उच्च जीवन निर्माण हेतु सामाजिक एवं नैतिक गुण आवश्यक ही नही बल्कि अनिवार्य है। नैतिकता के आधार पर लड़ी गई लड़ाई में जीत अवश्य होती है। तभी स्वतंत्र एवं आधुनिक भारत का निर्माण संभव होगा।

गाँधी जी और नारी सशक्तिकरण

डॉली वैलेश
सहा. प्राध्यापक
पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा महाविद्यालय, लावर, बिलासपुर

"एक आदमी को पढाओगे तो एक व्यक्ति शिक्षित होगा.एक स्त्री को पढाओगे तो पूरा परिवार शिक्षित होगा" .....सुनीता श्रीवास्तव

महात्मा गाँधी जी का महिला शाश्क्तिकरण पर एक सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्वपूर्ण पहलू हैं की वो महिलाओं को पुरुष के मुकाबले अधिक मेहनती और संवेदनात्मक मानते थे| नारी को अबला कहने के भी सक्त खिलाफ थे गाँधी जी की धारणा उनके आचरण,लेखो तथा व्याख्यानो में अनेक बार प्रकट हुए हैं| साथ ही महिला शशक्तिकरण के लिए महात्मा गांधी जी का यह कथन जानने योग्य हैं "उन्हें अबला कहना उनकी आंतरिक शक्ति का सम्मान नहीं करना हैं" इतिहास पर अगर नज़र डाले तो महिलाओं की वीरता की कई मिशाल मिलेगी महिलाओं की शक्ति से जब देश की गरिमा बढ़ सकती है तो महिलाएं यदि संकल्प कर ले तो वह अपनी आध्यात्मिक अनुभूति के बल पर देश का रूप बदल सकती है|

गाँधी जी और नारी सशक्तिकरण

डॉ. स्नेहलता निर्मलकर
सुलोचना कुर्रे
पी-एच.डी. (हिंदी) शोधार्थी
डॉ. सी.व्ही. रामन् विश्वविद्यालय, कोटा, बिलासुपर

"नारी सशक्तिकरण में आर्थिक स्वतंत्रता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। चाहे वह शोध से जुड़ी हो या फिर शिक्षा क्षेत्र में महिलाएं काफी अच्छा काम कर रही है। कृषि के क्षेत्र में भी महिलाओं का योगदान है।" भारत में नारी सशक्तिकरण के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे है। लेकिन इस सब के बावजूद महिलाएं सबसे अधिक उपेक्षा की शिकार हैं और भय के साये में है। दक्षिण अफ्रिका में अपने आंदोलन से ही बापू ने महिला सशक्तिकरण पर जोर दिया था लड़के और लड़कियों में आज भी फर्क किया जाता है। गांधी जी ने स्त्रियों को देश की लड़ाई के साथ जोड़कर साथ ही आश्रम में उनको समान हक व स्वतंत्रता प्रदान कर समाज में स्त्रियों का दर्जा कैसा होना चाहिए, उनकी अच्छी मिसाल हमें

उनके जीवन से मिलती है। महिलाओं के प्रति गाँधी जी के सकारात्मक दृष्टिकोण का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वे महिलाओं को पुरुषों के मुकाबले अधिक सुदृढ़ और सहृदय मानते थे। उनकी यह धारणा उनके आचरण, लेखों तथा व्याख्यानों में अनेक बार प्रकट हुई। संदर्भ में महात्मा गाँधी का यह उद्धरण जानने योग्य है, ''उन्हें अबला पुकारना महिलाओं का आंतरिक शक्ति को दुत्कारना है। यदि हम इतिहास पर नजर डालें तो हमें उनकी वीरता की कई मिसालें मिलेंगी यदि महिलाएं देश की गरिमा बढ़ानें का संकल्प कर ले तो कुछ ही महिनों में वे अपनी आध्यात्मिक अनुभूति के बल पर देश का स्वरुप बदल सकती है।''

गाँधी जी एवं सामाजिक दर्शन

डॉ. मालती तिवारी
विभागाध्यक्ष राजनीति शास्त्र
शास. महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, महासमुंद (छ.ग.)

महात्मा गाँधी न केवल भारत अपितु विश्व के महान विचारक थे। उन्होंने ऐसी समाज, राजनीतिक व्यवस्था, आर्थिक प्रणाली और नैतिक दृष्टि को विकसित किया। जो मानवता को समाज में शांति और समृद्धि की ओर ले जाने में सहायक है। किसी भी राष्ट्र, समाज की समस्त समस्याओं का निराकरण प्रेम, सत्य और अहिंसा से किया जा सकता है। भारत में गाँधी युग का विधिवत सूत्रपात 1920 असहयोग आंदोलन है। गाँधी जी ने कहा था कि हमें समाज की बुनियादी रचना करनी चाहिऐ, तभी समाज प्रगति कर सकेगा, समाज जिंदा तभी रहेगा जब समान ''फेस-टु-फेस'' संबंधी के साथ खड़ा होगा। हमने तो समाज को बाजार में बदल दिया है उपभोक्ता और बाजार रह गई है हम विकास इसी को मान रहे है लेकिन यह वास्तविकता से परे है। हमारी शिक्षा प्रणाली दिग्भ्रमित है, शिक्षा उसे कहते है जो मुक्ति की तरफ ले जाए। गाँधी जी ने कहा था कि शिक्षा ऐसी हो जो जीवन केंद्रित हो, शिक्षा का अनुबंध जो हम उपयोग करते है। जीवन उपक्रम है उससे होना चाहिए तभी एक जीवंत नागरिकों का समाज तैयार हो सकेगा। गाँधी जी ने कहा - ''समाज में मानवीय मूल्यों को स्थापित रहना चाहिये, हमने तरह-तरह के भेद खड़े किये है, जाति-धर्म के भेदों के आधार पर हम एक दूसरे से नफरत करते है।''

सामाजिक, मानवीय मूल्यों के लिए जरुरी है कि हम मानवीय दृष्टि अपनाऐं और मानवीय भूमिका में हो। एक ऐसे लक्ष्य तक पहुचनें की जहाँ अंहिसा के आधार पर ही मनुष्य के जीवन उसके समाज और उसके जगत की व्यवस्था की रचना की जा सके। उनका सामाजिक दर्शन हो, व्यक्ति से समाज बनता है और व्यक्ति का परिवर्तन समाज को परिवर्तित की दिशा में अग्रसर करता है। गाँधी जी यह भी कहते थे कि परिवर्तित समाज व्यक्ति के लिए उन संस्कारों की रचना करेगा जिससे नूतन संस्कृति का आविर्भाव होगा।

अतः गाँधी जी का मानना था समाज में मानवीय मूल्यों को स्थापित रहना चाहिये, तभी समाज राष्ट्र में प्रेम, सहिष्णु और दृढ़ चरित्र हमारी सामाजिक व्यवस्था में सुदृढ़ होगा।

शहरी क्षेत्र के प्राथमिक शालाओं के प्रधान पाठकों की नेतृतव क्षमता का उनके शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. शिवानी दीवान
सहायक प्राध्यापक (शिक्षा) शोध निर्देशक

रामखेलावन कश्यप
पी.एच.डी. शोधार्थी

डॉ.सी.व्ही.रमन विश्वविद्यालय कोटा, बिलासपुर

प्रधान पाठकों की नेतृतव क्षमता का उनके शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि पर सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रस्तुत अध्ययन में शहरी क्षेत्र के प्राथमिक शालाओं के प्रधान पाठकों की नेतृतव क्षमता का उनके शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इसके लिए न्यादर्श के रूप में छ.ग. के बिलासपुर जिले में स्थित शहरी क्षेत्र के प्राथमिक शालाओं के 50 प्रधान पाठकों एवं 400 शिक्षकों का चयन किया गया है। मापन हेतु मानकीकृत मापनी का उपयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त परिणाम से ज्ञात होता है कि यदि प्रधान पाठकों की नेतृतव क्षमता अच्छी होगी तो उनके शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि भी अच्छी होगी।

कोई भी शैक्षिक शोध इसलिए किया जाता है कि शिक्षा के क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली विभिन्न समस्याओं को पहचान कर उसका निदान किया जा सके और समस्याओं का समाधान खोजनें का प्रयास किया जा सके। ऐसे शोध तभी सार्थक हो सकते हैं जब उसका कोई शैक्षिक महत्व हो तथा इसका लाभ छात्रों को प्राप्त हो सके। वर्तमान में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो छात्रो में मूल्य, नेतृत्व तथा राष्ट्रीयता की भावना का विकास कर सके। अध्यापक एवं छात्र दोनों ही समाज के ऐसे अभिन्न अंग है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव एक दूसरे पर पड़ता है। अतः आज के बदलते हुए परिवेश में शिक्षा के क्षेत्र में जो भी आवश्यक परिवर्तन हो रहे है उनमें से एक प्रमुख शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि है। यदि शिक्षक अपने व्यवसाय में कार्यसंतुष्टि का अनुभव नहीं करेंगे तो इसका प्रभाव शिक्षण व्यवसाय पर पड़ेगा। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक एवं कार्यसंतुष्टि का परस्पर गहरा संबंध है। इसके अभाव मे शिक्षण व्यवसाय की कल्पना करना मुश्किल है।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन

श्रीमती सीमारानी प्रधान
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शास. महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नात. महावि. महासमुन्द (छ.ग.)

भारत के राष्ट्रपिता के नाम से विख्यात गाँधी जी राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता सेनानी, विचारक, समाज-शास्त्री के साथ-साथ महान शिक्षा शास्त्री भी थे। उनके देश को दिये गये योगदानों में शिक्षा दर्शन सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा संबधी उनके विचार का आधार उनका जीवन दर्शन है। उनके जीवन दर्शन के आधारभूत तत्व संक्षेप में निम्नानुसार है -

1. सत्य - मन, वचन, कर्म से सत्य का पालन करना ।
2. अहिंसा - प्रेम की शुद्धता ।
3. निर्भरता - सभी प्रकार के भय से मुक्ति।
4. सत्याग्रह - स्वयं को कष्ट पहुंचाकर भी सत्य हेतु आग्रह।

1920 से 1947 का युग गाँधी युग के नाम से जाना जाता है। गाँधी जी ने चहुँमुखी विकास पर बल दिया है, और शिक्षा से ही यह संभव है। गाँधी जी के अनुसार शिक्षा से तात्पर्य सिर्फ अक्षर ज्ञान नहीं है, बल्कि बालक का सर्वांगीण विकास है। बालक का सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, नैतिक व आध्यात्मिक विकास ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। उनके अनुसार शिक्षा से अभी समस्याओं का समाधान सम्भव है।

गांधी जी ने शिक्षा का जो ढांचा बनाया है, उनके दीर्घ अनुभव का परिणाम है, एवं भारत के सामाजिक व्यवस्था के अनुरुप है। उनका प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क करने का सुझाव बहुत ही महत्वपूर्ण है। बुनियादी शिक्षा के सूत्रधार गाँधी जी शिक्षा को सिर्फ साक्षरता नहीं मानते थे। उनके अनुसार शिक्षा तो सभी प्रकार के विकास का आधार है। उनके शिक्षा संबंधी विचार आज भी प्रासंगिक है। वास्तव में सत्य अहिंसा जैसे मूल्यों पर आधारित शिक्षा ही आदर्श नागरिकता का विकास कर सकता है।

गाँधी विचारधारा : वर्तमान संदर्भ में प्रासगिकता

डॉ. श्रध्दा हिरकनें
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)

श्रीमती मंजू भट्ट
पी-एच.डी. शोधार्थी (हिन्दी)

डॉ. सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय, करगी रोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

महात्मा गाँधी एक प्रमुख राजनीतिक, दार्शनिक एवं समाज सुधारक होने के साथ ही एक महान शिक्षा शास्त्री भी थे। गाँधी विचारधारा वर्तमान संदर्भ में आज जरुरत है कि हम अपने ढंग से ईमानदारी के साथ सत्याग्रह का सम्यक प्रयोग करें। हम सत्य पर अडिग हो, साधन शुध्दि पर हमारा भरोसा हो और व्यापक सत्याग्रह लोकहित पर हमारा ध्यान लगा रहें वर्तमान संदर्भ के गाँधी विचारधारा के माध्यम से समाज को बेहतर बनने में जनता को अपनी निर्णय लेने का अधिकार एवं निरंकुश राजसत्ता पर जनता के प्रभावी अंकुश के लिए नया समाज गढ़ने की बात कही गयी है।

गाँधी जी ने अपने जीवन को मानव समाज और देश को समर्पित कर अहिंसा की ताकत का मूल्य समझाया आखिर उसकी सोच, दर्शन, और सिद्धांत क्या हो, समाज रचना की तकनीकी क्या रही होगी, उसका सत्याग्रह कितना प्रांसगिक रहा होगा इसके लिए गाँधी विचार को जानना जरुरी होगा क्योकि विचार, दर्शन से प्रवाह हुआ करता है, और गाँधी दर्शन के मूल में आपको सत्य, अंहिसा, सादगी, अस्तेय, अपरिगह, श्रम और नैतिकता मिलेगी। जहाँ से स्थानीय स्वशासन, स्वावलम्बन, शोषण मुक्त व्यवस्था और सहयोग, सहभाव एवं समानता पर अधारित समाज का उदय होगा। भारत में गाँधी विचारधारा की प्रांसगिकता पर भले ही सवाल उठाए जाए, सवाल उठाने वालों की विचारधारा कुछ भी हो लेकिन इस हकीकत से इंकार नही किया जा सकता कि 21 वीं सदी में गाँधी विचारधारा ही है, जिसके जरिए शांति, सदभाव व एकात्मकता की भावना का विकास राष्ट्रहित ही है। महात्मा गाँधी देश के उन नेताओं में से एक हैं जिनसे हर कोई बहुत कुछ सीख सकता है, उनकी कही हुई बातें लोगों को सही और सफल राहों पर ले जाती है वर्तमान संदर्भ में उनकी कही बातों को जानने की जरुरत है। उनकी कही विचारधारा से समाज में कुछ अच्छा करने और बनने की प्रेरणा मिलेगी।

गाँधीवादी सिद्धांत और शिक्षा का प्रभाव

सतीश कुमार साहू
शोधार्थी - प्रबंधन विभाग,
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़, बिलासपुर

महात्मा गाँधी में राष्ट्रीय विकास और मानव विकास में योगदान देने वाले विचारों की एक समग्र अवधारणा थी। कौशल विकास, चरित्र निर्माण और मानव के विचार मे उन्हें सम्पूर्ण विश्वास था। ट्रस्टीशिप सिद्धांत का मानना था कि वह अपने आदर्श नागरिकों के साथ छोटे-छोटे आत्म निर्भर समुदायों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त करेंगा जो छोटे सहकारी समितियों और समुदाय में रहने वाले सभी स्वालम्बी, स्वभिमानी और उदार व्यक्ति होगें। उन्होंने कामना की थी कि बच्चों के लिए कौशल और कुछ स्थानीय व्यक्ति को शिक्षा का माध्यम बनाया जाय ताकि वे अपने मन शरीर और आत्मा का सामंजस्य एवं पूर्ण तरीके से विकास कर सकें, और वे अपने भावी जीवन के सम्पूर्ण जरुरतों को भी पूरा कर सके। ये गाँधीवादी सिद्धांत शैक्षिक विचार विकास के लिए प्राशांगिक है, और वर्तमान समस्याओं जैसे बेरोजगारी, भ्रष्टाचार में कमी, गरीबी, और कई अन्य समस्याओं का समाधान करने लिए सहायक सिद्ध होते है।

गाँधी जी आत्म-बलिदान और दर्शन शास्त्र पर विश्वास करते थे। गाँधी जी के अनुसार दर्शन शास्त्र को विकसित करना प्रेरणा का एक सच्चा स्रोत है। जहाँ प्राथमिक शिक्षा का नैतिक, स्वतंत्र, एवं रचनात्मक रुप से कार्य करना हैं। भविष्य में नागरिकों को कौशल विकास एवं प्रशिक्षण के माध्यम से उन्नत करना। गाँधी जी का मानना था कि जीवन का अंतिम उद्देश्य सत्य या ईश्वर का तलाश है जैसा कि उन्होंने समझाया शिक्षा से तात्पर्य है कि बच्चों में सर्वांगीण विकास और मनुष्य का मन, शरीर, और आत्मा का विकास करना है। ''साक्षरता न तो शुरुआत है और न ही अंत है शिक्षा''। किसी पुरुष या महिला को शिक्षित करने लिए, यह केवल एक माध्यम है।

गाँधी की भाषायी पत्रकारिता

अखिलेश कुमार तिवारी
हिंदी अधिकारी
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

आज जब पत्रकारिता व्यावसायिकता की चरम सीमा पर है, तो राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की पत्रकारिता, विशेष रुप से भाषायी पत्रकारिता को याद करना जरुरी हो जाता है। उनकी पत्रकारिता का उद्देश्य राष्ट्रीयता एवं जन जागरण था। देश की नई पीढ़ी महात्मा गाँधी को सत्य और अहिंसा के बल पर आजादी की लड़ाई के लिए जानती है। लेकिन मोहनदास करमचंद गाँधी से महात्मा गाँधी बनने के उनके सफर में पत्रकारिता के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन की शुरुआत पत्रकारिता से ही की थी। सन् 1998 में जब वे 19 वर्ष की आयु में कानून की पढ़ाई करने लंदन पहुंचे, तो 'टेलीग्राफ' और डेली न्यूज' जैसे अखबारों में लेख लिखना प्रारम्भ किया। गाँधी जी ने स्वतंत्र लेखन के माध्यम से पत्रकारिता में प्रवेश किया था।

आज जब पत्रकारों की कलम भोथरी हो गई है। सम्पादक का स्थान प्रबंध सम्पादकों, मुख्य कार्यपालन अधिकारी (सीईओ) एवं प्रबंधकों ने ले लिया है, महात्मा गाँधी की पत्रकारिता को जानना, समझना एवं पढ़ना जरुरी हो जाता है। पत्रकारिता के मौजूदा संकट को देखते हुए गाँधीवादी पत्रकारिता के मूल्यों की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। महात्मा गाँधी ने पत्रकारिता को कभी व्यवसाय के रुप में स्वीकार नहीं किया। वे एक मिशनरी पत्रकार थे वे इस बात को अच्छी तरह समझते थे कि उनके मिशन की सफलता के लिए पत्रकारिता एक सशक्त माध्यम है।

GANDHIAN VIEWS ON RURAL LIVELIHOODS: IT'S RELEVANCE IN THE CONTEXT OF A CHANGING RURAL INDIA

Amit Kumar Wadaskar
Ph.D. Research Scholar
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya Bilaspur (C.G.)

True India resides in its 7 lakh villages. If Indian civilization has to make its full contribution to building a sustainable world order, then this huge population settling in villages will have to be taught to live again (Hari, 27-4-1947).

Gandhiji envisaged the villages as a self-sufficient republic. They knew that India lives in its villages, which is why it emphasized the development of rural economies such as khadi, handloom, handicrafts, and sericulture. Rural industries were based on family labor and required less capital. Goods were sold in local markets. In this way, both production and market were taken care of. When our villages are fully developed, there will be no shortage of people with high-quality skills and artistic talent. Then the villages will also have their poets, artists, architects, linguists, and researchers. In short, whatever is attainable in life will be available in all villages. Gandhiji thought that villages should be permanently rebuilt, not temporary.

Present rural India is not untouched by the effects of modernization and industrialization, people are now migrating from village to city, agriculture has lost its importance for livelihood, rising unemployment, poverty, the glare of the city, For this reason, the importance of village is now coming to an end.

If the Gandhian views and ideas suggested by him for Gramotthaan are adopted, such as the use of khadi, self-employment, cottage industry & village industries, then all the needs will be met in the village & village will be Self-Reliant. Migration will reduce, unemployment, poverty will eradicated.

Gandhiji's dream of a clean & healthy India will come true. Therefore, in present-day rural India, Gandhian thought is as relevant as it was before.

Key Words: Livelihood, Modernization, Industrialization, Gramotthaan, Migration

Social Responsibility of Corporate: M. K. Gandhi's Doctrine of Trusteeship

Akash Dutta
Ph.D. Research Scholar
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya Bilaspur (C.G.)

Gandhiji advocated trusteeship doctrine. It is based on the principle that all people having money or property hold it in trust for society. Society is to be regarded as a donor to the individual and accordingly the latter is required to share part of his acquired wealth with the society for mutual benefit. According to this doctrine, business organizations have to be viewed as socio-economic institutions to be run and owned by 'Trust Corporation' with considerably diluted shareholdings. Most of the ideas of Mahatma Gandhi on trusteeship find expression in his speeches, short notes, and press interviews and informal discussions.

Mahatma Gandhiji transformed contemporary capitalists amidst the criticism from leftist quarters that he was working for a compromise in the interests of the Indian bourgeoisie. The purpose of this paper is to present a forerunner of today's conversations in the world about Corporate Social Responsibility (CSR). Gandhiji not only befriended a number of businesspersons but also advised them to consider their role as a steward of their wealth and businesses that they held. We intend to substantiate his pious intentions derived from his understanding of Bhagavad Gita, which suggested to him that one could enjoy one's acquired wealth by renouncing it. Persuaded by such moral disposition, Gandhiji argued that it is the surest method to evolve a new order of life of universal benefit of all people in the society as opposed to the order in which most of us live for ourselves without regard to what happens to our neighbour. The paper is based on archival materials representing his conceptualisation and acceptance of trusteeship and the collaborations of the capitalists that lived in his times.

Basically, Gandhi suggested this doctrine as an answer to the economic inequalities of ownership and income - a kind of nonviolent way of resolving all social and economic conflicts which grew out of inequalities and privileges of the present social order. Gandhi never ceased to believe in trusteeship in theory from the beginning or, at any rate, towards the later part of life, though the method was proving ineffective. He believed in the indispensability of nonviolence, noco-operation and Satyagraha in converting the privileged classes into trustees.

He even advocated violence as a last resort to dispossess property-owners of their wealth.

Therefore man's dignity, and not his material prosperity, is the centre of Gandhian economics. Gandhian economics aims at a distribution of material prosperity keeping only human dignity in view. Thus, it is dominated more by moral values than by economic ideas. According to Gandhi, trusteeship is the only ground on which he can work out an ideal combination of economics and morals.

Keywords: Trusteeship, Gandhi capitalists, Indian freedom Movement, Corporate Social Responsibility and Gandhi, Swadeshi

Role of Gandhian Leadership Style in Today's Organisation

Kailash Kumar Sahu
Research Scholar (Management)
Dr. C. V. Raman University, Bilaspur (CG)

Today, organisations need to resolve number of issues like conflict among employees, distrust, non-cooperative behaviour among employees, negative environment etc. For these, Gandhian leadership style (GLS) offers a positive environment in the current organisations which helps in making relationships stronger, completing work faster and increasing trust and happiness among employees. In this research, Gandhian principles and values were discussed and its relevance in the current organisations. This research also discusses about how Gandhian leadership style can enhance the efficiency and effectiveness of the organisation and also satisfy and retain the employees for a long term.

Keywords: Gandhian Leadership Style (GLS), Conflict, Values and Principles.

जैन दर्शन का गाँधी के जीवन पर प्रभाव का अध्ययन

दिनेश जैन
बिलासपुर

महात्मा गाँधी ने स्वयं कहा मेरे पास अपना कुछ नही है , जो मैं जानता हूँ या कह रहा हूँ, वह हमारे धर्म ग्रन्थों में सब पहले से है। जब मोहन दास करमचंद गाँधी छोटे थे तो अपनी माता पुतली बाई के साथ जैन घर्म गुरुओं के पास व्याख्यान धार्मिक प्रवचन सुनने जाती थी, जिसका कुछ प्रभाव उन पर भी पड़ा और जैन धर्म में उनकी आस्था बन गई थी। यही कारण है कि वे जैन धर्म के मूल सिध्दांतों को जिसमें सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह अर्थात जितना जरुरत है उतना ग्रहण करना, अचौर्य अर्थात चोरी नहीं करना तथा बम्हचर्य की बातों से बचपन में ही वाकिब हो गये थे। अपनी आत्मकथा में उन्होने एक घटना का उल्लेख किया है कि जब वे विदेश जाने के लिये अपनी माता पुतलीबाई से अनुमति माँगने गये तो वह इस बात से गई थी कहीं मनु (महात्मा गाँधी) वहाँ जाकर माँस मदिरा का सेवन न करने लग जाये इस तरह कहीं वे विदेश जा कर अपना धर्म ना खो दें, इसलिये वे उन्हें लेकर जैन सन्त बेचरस्वामी के पास गई और उनसे प्रतिज्ञा दिलायीं की वे वहाँ जैन धर्म के मूल सिध्दान्तों का पालन करते रहेगें, इस बात का वर्णन गाँधी जी ने अपनी आत्मकथा सत्य के प्रयोग के पृष्ठ कं. 82 में उल्लेखित किया है। यही अहिंसा उनके आत्मबल के विकास और आत्मशुध्दि के अचूक उपाय के रुप में आगे जाकर गहरा असर कर गया और कई स्थान पर उन्होने स्वयं स्वीकार किया कि वे जैन धर्म से प्रभावित हैं। यहाँ यह बताना भी आवश्यक है, कि उनके परिचित जो दूर के रिश्ते में दादा थे जिनका नाम वीरचंद गाँधी था जो कि उन्नीसवीं शताब्दी के एक प्रसिध्द जैनिज्म विचारक व बहुत बड़े लायर थे, जिन्होने प्रथम धार्मिक सांसद को अमेरिका के शिकागो में उसी धर्म सभा को 1893 में जैन दर्शन पर अपना व्याखान दिया था जहाँ बाद में स्वामी विवेकानन्द ने हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व करते हुये पूरे विश्व को सम्बोधित किया था, इनसे भी महात्मा गाँधी प्रेरित हूये बिना न रह सके। महात्मा गाँधी जहाँ राजनीति में अपने गुरु के रुप में गोपालकृष्ण गोखले को मानते थे

वही आध्यात्मिक गुरु के रुप में जैन सन्त श्री श्रीमद् राजचन्द्र जी को मानते रहे। वे उनके आध्यात्म ज्ञान से बेहद प्रभावित हुये थे, जिसका वर्णन उन्होने अपनी आत्मकथा में कई बार किया है। गाँधी जी टालस्टाय व सर्वोदय के सिध्दान्तों से भी प्रभावित हुये थे, जिसमें सर्वोदय अर्थात जिससे सबका उदय व विकास होता हो। इसे उन्होने जैन मुनि समंतभद्र के कथन सर्वापदामंतकरं निरंतुं सर्वोदयं तीर्थमिदं तवैव व अन्य घर्म वाक्य श्सर्व खल्विदं ब्रम्ह के साथ हिन्दू धर्म ग्रन्थ के वसुदैव कुटुंबकं से ही सर्वोदय सिध्दान्त भी संबंधित माना था, जिससे वह अन्त तक जुड़े रहे।

महात्मा गाँधी और उनकी साहित्यिक पत्रकारिता : एक अध्ययन

राकेश कुमार
पी-एच.डी. शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

गांधी जी की पत्रकारिता का सफ़र अफ्रीका से शुरू होती है, जहाँ पर उनके पगड़ी को लेकर वहां के एक कोर्ट परिसर में गांधी जी को पगड़ी पहनने से मना कर दिया गया। और कहा गया कि उन्हे केस की कार्रवाई बिना पगड़ी के करनी होगी। जिसके कारण गांधी जी को अपनी पगड़ी को कोर्ट परिसर में ही उतारनी पड़ गयी। अगले ही दिन गांधी जी नेडरबन के एक स्थानीय संपादक को खत लिखकर इस मामले पर अपना विरोध जताया । विरोध के तौर पर लिखी उनकी चिट्ठी को अख़बार में जस का तस प्रकाशित किया गया। यह पहली बार था जब गांधी जी का कोई लेख अख़बार में प्रकाशित हुआ था। और इस प्रकार से गाँधी जी की पत्रकारिता का सफ़र एक दुखद परिस्थति से शुरू होती है। इसके बाद शायद गांधी जी को यह बात समझ में आ गयी थी कि पत्र-पत्रिकाएं ही वह माध्यम हैं जिसके द्वारा वें अपनी बातों को लोगों तक आसानी से पहुंचा सकते हैं। इसके बाद गांधी जी नें कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। अब वह अपनी बातों को लोगों तक पहुँचाने के लिए लेख के रूप में पत्र-पत्रिकाओं में छपवाने लगे थे। इसी का प्रभाव देख उन्होंने अफ्रीका में ही इन्डियन ओपिनियन का प्रकाशन शुरु करवाया। उस दौर में उन्होनें इस अख़बार को पांच भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया था। गांधी जी नें अपनी साहित्यिक प्रेम को भी बख़ूबी तौर से निभाया और कई दशकों तक साहित्यिक लेखक एवं पत्रकार के रूप में कार्य किया तथा कई समाचार पत्रों का संपादन भी किया। महात्मा गांधी ने उस समय में जब भारत में पत्रकारिता अपने शैशवकाल में थी, पत्रकारिता की नैतिक अवधारणा प्रस्तुतकी। महात्मा गांधी ने जिन समाचार पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन अथवा संपादन किया वे पत्र-पत्रिकाएं अपने समय में सर्वाधिक लोकप्रिय पत्रों में माने गए। जिसको जानना आज के युवा पीढ़ी के लिए बहुत जरुरी हो गया है।

''महात्मा गाँधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञानों की सीमाओं, संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा''

आकांक्षा अग्रहरि
एम.एड. प्रथम सेमेस्टर
आई.ए.एस.ई. बिलासपुर (छ.ग.)

गाँधी जी के जीवन दर्शन में चार प्रमुख तत्व है- 1. सत्य 2. अहिंसा 3. निर्भयता 4. सत्याग्रह। सन् 1917 में उन्होंने 'हरिजन उद्धार' ग्रामोद्योग तथा अन्य सामाजिक सुधारों एवं रचनात्मक कार्यो को करने के लिए साबरमती आश्रम की स्थापना की। उन्होंने हरिजन नामक पत्रिका में (सन् 1937) लिखा था कि - बुनियादी शिक्षा शहर और ग्राम के संबंध में स्वस्थ्य और नैतिक आधार बनेगी। इस प्रकार बुनियादी शिक्षा भारतीय ग्रामों को शोषण से और सामाजिक अथवा वर्गगत द्वेषों से मुक्त करके उनमें एक स्वालंबी, अहिंसक ओर जनतंत्रीय समाज की स्थापना करना चाहती है। बुनियादी शिक्षा से तात्पर्य-शिक्षा हस्त कला पर आधारित कर दी जाए। गाँधी जी के शिक्षा संबंधी विचारों में आदर्शवाद और यर्थाथवाद का अनुपम समन्वय मिलता है। गाँधी जी के अनुसार राष्ट्र भाषा के माध्यम से शिक्षा होने पर ही देश की संस्कृति और साहित्य समृद्ध होंगे। गाँधी जी ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए लिखा है शिक्षा से मेरा तात्पर्य है -''बालक और मनुष्य के शरीर मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुंमुखी विकास।'' अहिंसा गाँधी जी की दार्शनिक विचारधारा का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है।

महात्मा गाँधी का परिचय

बिरीज खाण्डे
शिक्षा विभाग
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि. बिलासपुर (छ.ग.)

महात्मा गाँधी जी का जन्म पश्चिम भारत के गुजरात नामक शहर के एक तटीय स्थान पोरबंदर नामक स्थान पर 02 अक्टूबर 1869 को हुआ था। इनके पिता श्री करमचंद गाँधी जी थे। ब्रिटिश सरकार के अधीन गुजरात में काठियावाड़ की रियासत मे प्रधानमंत्री थे। इनकी माता का नाम पुतलीबाई थी, इनकी शिक्षा स्थानीय स्तर पर हुई और मुबंई विश्वविद्यालय मे मैट्रिक 1887 ई. में पास किये, 4 सितम्बर 1888 ई. को गाँधी जी बेरिस्टर की शिक्षा के लिये लंदन गये, जहां उन्होने युनिर्वसिटी कॉलेज ऑफ लंदन मे पढ़ाई किये। बाद मे इंग्लैड और वेल्स बॉर एसोशियेशन द्वारा बुलाये जाने पर गाँधी जी वापस मुंबई लौट आये। मुंबई मे सफलता नहीं मिलने पर जीविका के लिये गाँधी जी को मुकदमा की अर्जियां लिखने का कार्य प्रारंभ किया। गाँधी जी 1893 ई. में गांधी जी एक वर्ष की करार के साथ दक्षिण अफ्रिका चले गये, दक्षिण आफ्रिका में अंग्रेज सरकार के फर्म नेटल से वकालत शुरु किया। सन् 1883 में उनका विवाह कस्तुरबा बाई माखा जी से हुआ। इनके चार पुत्र हुये, प्रथम हरिलाल गाँधी 1888 ई., द्वितीय मणिलाल गाँधी 1892 ई, तृतीय रामदास गाँधी 1897 ई. एवं चतुर्थ देवदास गाँधी 1900 ई. में हुये। गाँधी जी थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य भी बने थे, इन्हे गीता सार का भी ज्ञान प्राप्त हुआ। रिति रिवाज और सामाजिक भावनाओं का भी रुचि पूर्वक ध्यान दिये जिसमे सभी धर्मो कर्मो में जानकारी एकत्रीत किया।

संयुक्त राष्ट्र ने गरीबी एवं भूख से लड़ने का लक्ष्य तय किया था, लेकिन इसका पूरी दुनिया से अभी भी सफाया नहीं हो पाया है, सामाजिक असमानता को सामुहिक प्रयास से ही दूर किया जा सकता है। सरकार कई नियम व परिनियम तो लाते रहता है, गाँधी जी ने भी सामुदायिक विकास के लिए जो कार्य किया वह आज भी अनुकरणीय है, और गाँधी जी के विचार और सिद्वांत को अमेरिका और भारत में और अधिक प्रचार-प्रसार की जरूरत है क्योंकि किसी भी देश का विकास कृषि, शांति व अहिंसा से हो सकता है।

The Environmental Crisis and Relevance of Gandhiji

smt. Rajshree Kumbhaj
Research scholar
Pt. sundarlal Sharma (open) university,Bilaspur(c.g)

Man's progress and the road to development has led to the deterioration of nature. In his quest for fulfilling his needs, he has exploited nature to its maximum. This is development that is ecologically not sustainable. Awareness about the degradation of environment has been growing since the fifties. Steps were being taken to increase this awareness through books, conferences, etc. The irony is that though every responsible person seems to be worried and anxious about environmental degradation, a meaningful solution is nowhere in sight. It is here that the Mahatma's teachings give us some hope. If environment is to be saved from degradation we have to avoid or limit the use of machinery. That is where Gandhiji's promotion of khadi and Village Industries have become more relevant today than during the freedom struggle. We should read Gandhiji's Constructive Programme. Harijans and women are not yet treated as equal members of our society. Health and hygiene are wanting in Rural India. Many other aspects of life are discussed in the constructive programme.

Even more important are the eleven Vows or Vratas of Gandhiji which are non-violence, Truth, Non-stealing, Brahmacharya, Non-avarice, Physical labour, Control of Palette, Religious harmony, Fearlessness, Swadeshi and Abolition of untouchability. In fact, the significance of each of the vratas could be elaborated in the context of preserving the environment. Through the cardinal point Gandhiji has been expounded in this essay, I cannot help repeating Gandhiji's famous quotation. "The earth has enough resources for our need, but not for our greed." What greater message is there to save this earth from the environmental disaster?

गाँधी जी और वर्तमान

जितेन्द्र प्रसाद गुप्ता

गांधी जी की सरलता की पराकाष्ठा का व्यक्तित्व एवं जीवन वर्तमान के सामाजिक राजनीतिक एवं अंतराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मे उतना ही प्रासंगिक है, जितना 100 साल पहले था।हम विकास के पथ पर कितना ही आगे क्यो न बढ़ जाएं किंतु गाधी जी के सिद्वांतो एव उनके दर्शन को नकारना असंभव है। जब भी भारतीय समाज की बात होती है, गांधी दर्शन के बिना अधूरी रहती है।

वर्तमान संदर्भो मे जब गांधी जी के प्रासंगिकता की बात होती है, तो आज चाहे भारत का फैशनेबल युवा हो या किताबी ज्ञान के महारथी आई टी प्रोफेशनल हो या ग्रामीण बेरोजगार युवा हो सभी के गांधी जी प्रिय पात्र है।ये सभी गांधी जी को अपने से जोडे. बगैर नही रख सकते है।

गांधी जी के विचार आज भी इतने प्रासंगिक एवं अनुकरणीय है, जितने अपने वक्त मे थे।गांधी जी का बचपन उनके सामाजिक एवं राजनीतिक विचार सर्वोदय सत्याग्रह खादी ग्रामोद्योग महिला शिक्षा स्वावलंबन अस्पृश्यता एवं अन्य सामाजिक चेतना के विषय आज के युवाओ के शोध एवं शिक्षण के प्रमुख क्षेत्र है।

गाँधी जी और दलित उद्धार

युगल सिंह
शोधार्थी
डॉ सी.वी.रामन वि.वि. कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

हिन्दु समाज में जिन जातियों या वर्गो के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार किया जाता था और आज भी कुछ हद तक वैसा ही विषय व्यवहार कही-कही पर सुनने और देखने में आता है, उनको अस्पृश्य, अत्यंत या दलित नाम से पुकारते थे। यह देखकर कि ये सारे ही नाम अपमानजनक है, सन् 1932 के अंत में गुजरात के अव्यंज न ही महात्मा गाँधी को एक गुजराती भजन का हवाला देकर लिखा कि ''हरिजन'' जैसा सुंदर नाम क्यों न दिया जाये उस भजन में हरिजन ऐसे व्यक्ति को कहा गया है, जिसका सहायक संसार में सिवाय एक हरि के, कोई दूसरा नही है। गाँधी जी यह

नाम पंसद कर लिया और यह प्रचलित हो गया। वैदिककाल में अस्पृश्यता का कोई उल्लेख नहीं पाया जाता। परंतु वर्णव्यवस्था के विकृत हो जाने और जाति-पाँति की भेदभावना बढ़ जाने के कारण अस्पृश्यता का जन्म लिया। इसके ऐतिहासिक राजनीतिक आदि और भी कारण बतलाए जाते है। किंतु साथ ही साथ, इसे सामाजिक बुराई भी बतालाया गया। कई ऋषि मुनियों ने, बुद्ध एवं महावीर ने, कितने ही साधु संतो ने, तथा राजाराम मोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती प्रभूति समाज सुधारको ने इस सामाजिक बुराई की ओर हिंदु समाज का ध्यान खींचा, लेकिन सही प्रयत्न गाँधी जी ने किया। दलितों के लिये गाँधी जी ने अस्पृश्यता को हिंदु धर्म के माथे पर लगा कलंक माना और कहा कि यदि अस्पृश्यता रहेगी, वो हिंदु धर्म का उनकी दृष्टि में ''मानव धर्म'' का नाश निश्चित है। 12 नवम्बर 1931 को गाँधी जी ने अछुतो, दलितों की ओर से बोलते हुये कहा - मेरा दावा है कि अछुतों के प्रश्न का सच्चा प्रतिनिधित्व तो मैं कर सकता हूँ। यदि अछुतों के लिये पृथक निर्वाचन मान लिया गया, तो उसके विरोध में मैं अपने प्राणों की बाजी लगा दूंगा। गाँधी जी को विश्वास था कि पृथक निर्वाचन मान लेने से हिन्दु समाज के दो टुकड़े हो जायेंगे। उसका यह अंगभंग लोकतंत्र तथा राष्ट्रीय एकता के लिये बड़ा घातक सिद्ध होगा। और इससे दलित का उद्धार निश्चित होगा।

गाँधी जी और नारी सशक्तीकरण

मिथलेश सिंह राजपूत
शोधार्थी
डॉ सी.वी.रामन वि.वि. कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गाँधी का योगदान तो अतुलनीय रहा ही, इसके साथ ही आजाद भारत में हर तरफ के भेदभाव से मुक्त समाज का निर्माण हो, इसके लिये भी उन्होंने अनेक प्रयास किए। विशेषकर महिलाओं को समाज में उचित सम्मान और महत्व मिले, वे भययुक्त, आत्मनिर्भर और सशक्तबने, इसके लिये भी उन्होंने भरपूर प्रयत्न किए। आज भी उनकी विचारधारा, महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में हमारी मार्गदर्शक बनी हुई है। गाँधी जी की सोच समय से बहुत आगे थी। वे आने वाले समय की आहट को पहचानते थे। बींसवीसदी के पूर्वार्द्ध में जब गाँधी जी भारत की आजादी के लिये संघर्षरत थे, तभी से आजाद भारत के निर्माण के आधारभूत तत्वों पर बहुत सोचते थे, गाँधी जी को इस बात का पूरा भान था, यह देश कैसे विकास की डगर पर आएगा। कैसे आत्मनिर्भर बनेगा और इस राह में किन-किन लोगों की भागीदारी जरुरी है? गाँधी जी आजादी के बाद ऐसे भारत की कल्पना करते थे, जहाँ असमानता के लिये कोई स्थान न हो, हर नागरिक को आगे बढ़ने का अवसर मिले यही वजह रही कि उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के समय ही समाज में मौजूद हर तरह की असमानता को लेकर भी वे बहुत ज्यादा गंभीर थे। गाँधी जी कहते थे। महिलाओं को कमजोर समझना निदंनीय है, यह पुरुषों का महिलाओं के साथ किया गया अन्याय है। अगर नैतिक शक्ति के आधार पर क्षमता का आकलन किया जाए तो महिलाएं पुरुषो से ज्यादा श्रेष्ठ है। इस कथन से स्पष्ट है कि गाँधी जी महिलाओं को पुरुषों से श्रेष्ठ मानते थे। लेकिन उनका यह भी मानना था कि महिलाओं को बराबरी का दर्जा तब तक मिलना संभव नहीं है जब तक स्वंय स्त्री अपनी शक्ति और आत्मबल को पहचानकर आत्मनिर्भर नहीं होती। इसके लिये गाँधी जी ने भारतीय महिलाओं की चेतना- शक्ति को जागृत करने के अथक प्रयास किये। यह इस प्रयास हेतु सन् 1933 में बिलासा केंवटीन के नगरी बिलासपुर भी आये थे।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन

श्री कालीचरण यादव
सहा. प्राध्यापक

श्रीमती मीनाक्षी महंत
सहा. प्राध्यापक

पं. मदन मोहन मालवीय शिक्षा महाविद्यालय,लावर, बिलासपुर, (छ.ग.)

भारत के सिद्ध पुरुष एवं नव युग के निर्माता, नव चेतना के मूर्तिमान पुरुष महात्मा गाँधी जी की महानता केवल राष्ट्र को स्वतंत्र कराने में ही नहीं बल्कि राष्ट्र के निर्माण में भी थी। गाँधी जी ने शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास को शिक्षा माना है। शिक्षा दर्शन भी उनके जीवन दर्शन का एक प्रतीक था। जीवन दर्शन के रुप में वह सत्य व अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने ईश्वर को सदैव एक सतत् सत्ता के रुप में स्वीकार किया। सत्य के बिना किसी भी वस्तु का अस्तित्व संभव नहीं है। वे मानते थे कि प्रत्येक जीवधारी में ईश्वर का वास होता है। गाँधी जी ने शिक्षा का अर्थ बताते हुए कहा कि शिक्षा से तात्पर्य बालक के शरीर, मन व आत्मा का सम्पूर्ण विकास है। शिक्षा अक्षर ज्ञान नहीं है वरन् वह व्यवहार का परिमार्जन करने कि एक प्रक्रिया है। गाँधी जी की शिक्षा दर्शन में भौतिकवादी दृष्टिकोण भी मिलता है। उन्होंने उत्पादक क्रिया को शिक्षा का माध्यम बनाने कि संस्तुति की है। इसके लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक बालक अपने बचपन से अपनी रोटी कमाने के लिए आदत बनाए तथा शिक्षा में श्रम तथा वैज्ञानिक ज्ञान जोड़े। व्यावहारिक शिक्षा का मूलाधार ही भौतिकवादी कहा जाता है क्योंकि उसका लक्ष्य है कि भारत के बालकों को ऐसे कौशलों का ज्ञान दिया जाए ताकि वे आत्मनिर्भर कमाऊ व्यक्ति बने। प्रकृतिवादी दर्शन की भी झलक गाँधी जी के विचारों में मिलती है। गाँधी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में बालक की मूल प्रवृत्तियों तथा रुचियों की ओर ध्यान देने को कहा है, उन्होंने शिक्षा पर बल दिया है। बालकों को शिक्षण देते समय प्रेम, दया, सहानुभूति व करुणा का मुख्य स्थान बताया है। उन्होंने आध्यात्मिक, बौद्धिक, शारीरिक व जीविकोपार्जन लक्ष्यों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षा देने कि अनुशंसा की है और बालक का पूर्णरुपेण विकास होना ही शिक्षा है।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन

श्री बीरुलाल बरगाह
शोधार्थी
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि. छत्तीसगढ़ बिलासपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व आदर्शवादी प्रयोजनवादी विचारधारा से परिपूर्ण था। संसार में एक महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रुप में विख्यात रहे हैं। उनका मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। गाँधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में विशेष योगदान रहा है। उनका मूल मंत्र था 'शोषण विहीन समाज एवं राष्ट्र की स्थापना करना'। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक को शिक्षित होना अनिवार्य है क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र का निर्माण असंभव है। अतः गाँधी जी ने शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों की व्याख्या की। उनका मानना था कि भारत के प्रत्येक बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जो उन्हें स्वावलंबी बनाये और वे राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके ।

गाँधी जी महान शिक्षा दार्शनिक थे। शिक्षा और दर्शन में गहरा संबंध है। अपनी पुस्तक 'एड्रेसेज टु दि जर्मन नेशन' में शिक्षा एवं दर्शन के संबंध में लिखते हैं कि ''दर्शन के अभाव में शिक्षण कला कभी भी पूर्ण स्पष्टता नहीं प्राप्त कर सकती। दोनों के बीच एक अन्योन्य क्रिया चलती रहती है। और एक के बिना दूसरा अपूर्ण तथा अनुपयोगी है। शिक्षा के अन्य अंगों की तरह अनुशासन के विषय में भी दर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विद्यालय में अनुशासन के माध्यम से छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास होता है। साथ ही छात्रों में अनुशासन जागृत होती है ।''

महात्मा गाँधी जी की भारत को जो देन हैं उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है। इसे वर्धा योजना, नयी तालीम, बुनियादी शिक्षा आदि नामों से जाना जाता है। गाँधी जी ने 23 अक्टूबर 1937 को नयी तालीम की योजना बनायी जिसे राष्ट्रव्यापी व्यवहारिक रुप दिया जाता था। उनके शैक्षिक विचार तात्कालीन शिक्षा शास्त्रियों के विचारों से मेल नहीं खाते इसलिए प्रारंभ में उनके विचारों का विरोध हुआ। गाँधी जी ने कहा था कि नयी तालीम का विचार भारत के लिए उनका अंतिम एवं सर्वश्रेष्ठ योगदान है।

Gandhiji and Geography

smt.kusumkanti kujur
Research scholar
Pt.sundarlal Sharma (open) university,Bilaspur

Gandhi encouraged students to compete in games but never urged them on to outdo on another in learning. His method of giving marks was unusual. He did not compare the work of one pupil with the work of the best in the class, but gave him higher marks if he improved upon his own class work or home work. He placed full trust in the students and kept no guard on them when they sat for a test. Liberty of the child was the guiding principle of ashram education. His advice was: "The youngest child should feel that it is something."

Gandhi wanted to have basis schools in every villages and he knew that it would not be possible till the schools or at least the teacher became self-supporting. The students of the basic schools had to learn some handicraft the most common being spinning. Gandhi believed that one should begin with the children to enkindle a true sense of equality and to attain real enkindle a true sense of equality and to attain real peace in the world.Thus was the child taught geography, nature study, arithmetic, geometry and the growth of civilization. Gandhi showed how basic education(kutir udyug) could make the pupils partly earning how basic education(kutir udyug) could make moment they reached years of understanding. In the frequent speeches delivered in student's meetings and in his convocation address at the Kashi Vidyapith.

''गाँधी जी के विचारों की व्यवहारिकता: वर्तमान परिपेक्ष्य मे''

मोहम्मद वसीम अकरम मोमिन
शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)
पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

वर्तमान में गाँधी संगत है। युद्ध व संघर्ष से त्रस्त विश्व राजनीति को बचाने का यही एक मात्र उपाय है। वैचारिक संघर्ष में पड़कर विश्व को सर्वोदय का सन्देश गाँधी जी की महत्वपर्ण देन है। अहिंसात्मक क्रांति के रुप में यह मानव का नैतिक उत्थान करना चाहता है। गाँधी जी का विचार एक शाश्वत दर्शन है और इसे व्यवहार में प्रयोग किया जा सकता है। महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों को ''गाँधीवाद'' नाम से संबोधित किया जाता है। गाँधी जी का जीवन ही उनके विचारों और आदर्शो की अभिव्यक्ति के लिए पर्याप्त है। सत्य व अहिंसा के प्रति अनुराग भी उनमें बचपन से ही पैदा हो गया था। महात्मा गाँधी ने जीवनपर्यन्त अहिंसा और सत्य का पालन किया था इनके पुरखे भी इन्हीं की तरह सत्य और अहिंसा के पुजारी थे।

गाँधी जी ने सत्य को स्पष्ट करते हुए कहा था ''सत्य ही ईश्वर है'' सत्य सत् शब्द से निकला है। इसका अर्थ है- अस्तित्व का होना। सत्य को ईश्वर कहने का यह कारण है कि सत्य वही है जिसकी सत्ता होती है, जो सदा टिका रहता है। ब्रम्हा या परमात्मा की सत्ता तीनों कालों में बनी रहती है अतः यह सत्य है। गाँधी जी अपने जीवन का ध्येय 'सत्य की खोज' करना समझते थे। इसी कारण से उन्होंने अपनी आत्मकथा का नाम ''मेरे सत्य के प्रयोग'' रखा। हम सत्य शब्द का अर्थ केवल 'सच बोलना' समझते है, लेकिन गाँधी जी ने सत्य का व्यापकतम अर्थ लेते हुए बार-बार यह आग्रह किया कि विचार में, वाणी में, और आचार में सत्य का होना ही सत्य है। गाँधी जी कि दृष्टि में सत्य की अराधना ही सच्ची भक्ति है। वे सत्य के परिवेश केवल व्यक्ति में नहीं अपितु समाज व समूह का सत्य के प्रति समावेशन हो उनका लक्ष्य था। वे चाहते थे सत्य का पालन धर्म, राजनीति, अर्थनीति, परिवार-नीति सब में होना चाहिए। सत्य के साथ जीवन व्यतीत करने वाले मनुष्य का जीवन ही पृथ्वी पर परमात्मा की श्रेष्ठ रचना है। सत्य व अहिंसा के मार्ग पर चलकर नमसा विवासेत (ऋग्वेद 10:31:02) परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। गाँधी जी ने ना केवल भारत में अपने राजनीतिक क्षेत्र में विलक्षण कार्य किया अपितु विश्व के राजनीतिक चिन्तन में बड़ी क्रांतिकारी मौलिक देन दी है। उनके सत्य और अहिंसा के मार्ग में चलकर भारतवर्ष की कई गंभीर समस्याओं जैसे हिंसा, जातिवाद, असहिष्णुता तथा साम्प्रदायिकता का समाधान शांतिपूर्ण माध्यम से किया जा सकता है। समस्त विश्व को शांति के साथ विकास के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है।

Psychological Prospective and Gandhian ideology

Sarika Gautam
Research Scholar
Department of Psychology
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur

Whenever we talk about Mahatma Gandhi or his ideology towards India or world, we find dynamic views on politics, education, rural development, mental health, gender discrimination, cleanliness etc. The fact is that in the study of psychology we have so far scratched only the surface. Vaids, hakims and doctors have merely busied themselves with the body, and have not analyzed the mind at all; being themselves men troubled by desires, they have spent their time finding out remedies merely by observing the changes in the body. However, students of psychology say that both the phases of the mind arise out of the same cause. Excessive love can assume a fierce face. If I torture my wife, it hurts me more. Mahatma Gandhi tells us to be aware about all these.

GandhiJi's Nai Talim

Dr. Roli Tiwari
Assistant Professor
Institute of Teacher Education
Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur (C.G.)

A national education conference was held at Wardha on 22–23 October, 1937 where Mahatma Gandhi imparted his vision about education in front of nation. He endorsed an educational curriculum which was based on the pedagogical principle was known as Nai talim. The three pillars of his pedagogy were to focus on the *lifelong character*, *social character* and its form as a *holistic process*. The principal idea was to impart the whole education of the body, mind and soul through the handicraft that should teach to the children.

Nai Talim is a principle which affirms that knowledge and work are not separate. It can be translated with the term 'Basic Education for all. However, the concept has several layers of meaning. It developed out of Gandhiji's experience with the English educational system and with colonialism in general. He saw that Indian children would be estranged from our culture, values and become dominant by 'career-based thinking'. On his own words "The schools and colleges are really a factory for turning out clerks for Government." In addition, it personified a series of negative outcomes: the disregard for manual work, the development of a new elite class, and the increasing problems of industrialization and urbanization.

But,"the implementation of Gandhi's plan could not survive the 'development decade' of the 1960s when the Indian economy and politics entered into a new phase featuring the dispersion of Indian agriculture by the advanced economies of the West and the centralization of power" (Krishna Kumar, 2006).

The time demands building relationships between the learner and the teacher, the community, the living space. There is a need to find associations and connections within everyday activities and things. Society is in need of new values, new ways of doing things, a new story which moves from the *I* to the *we*, to be able to see the world as one and to see the interconnectedness of everything. Nai Talim has that potential to build the nation in such form.

गाँधी जी का सर्वोदय और शाश्वत भारत की परिकल्पना

डॉ निशु सिन्हा
सहायक प्राध्यापक (तदर्थ) इतिहास

विपिन तिर्की
शोधार्थी इतिहास

गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

प्राचीन समय से लेकर आधुनिक समय तक भारत वर्ष अपनी सभ्यता, संस्कृति, आध्यात्म, दर्शन एवं ज्ञान के संदर्भ में विश्व गुरु रहा है और भविष्य में भी रहेगा । भारत वर्ष ने विश्व को कई मूलमंत्र प्रदान किये हैं, जैसे - असत्य अधंकार मृत्यु से सत्य प्रकाश अमरत्व की ओर, समस्त विश्व एक कुटुम्ब के सामान है, एक ही सत्य है और वह है ब्रह्मा, अतिथि देवता का रूप है, तन मन धन से राष्ट्र की रक्षा करना, निष्कामाकर्मा अर्थात् फल की चिंता किए बिना कार्य करना, सबका साथ सबका विकास और अंततः समस्त मानव जाति का कल्याण करना अर्थात् सर्वोदय । सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास ही सर्वोदय है ।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखमनुप्यात ॥

विश्व की एवं विश्व के समस्त मानव जाति की सृष्टि उस एक ही चिरजीवी, सर्वव्यापी एवं सर्वशक्तिमान से हुई है, जिन्हें हम ईश्वर, ब्रह्मा, खुदा इत्यादि नामों से पुकारते हैं । जब से मानव का अस्तित्व इस पृथ्वी पर हुआ है, तब से एक मानव दूसरे मानव के प्रति मानवता का धर्म निभाता चला आ रहा है । आज जब पूरा विश्व मानवता की पहचान कर पाने में असमर्थ है, वहीं भारत वर्ष 'सबका साथ, सबका विकास' मंत्र को पुनर्जीवित कर सम्पूर्ण विश्व को विश्व कल्याण की ओर अभिप्रेरित कर रहा है ।

वर्तमान समय में शाश्वत भारत की कल्पना तभी संभव है, जब प्रत्येक भारतवासी के जहन में सर्वोदय की भावना जागृत हो एवं व्यावहारिक जीवन में क्रियान्वित हो । भारतीय संस्कृति हमें यही शिक्षा देती है कि 'दूसरे के जीवन में शामिल होना और दूसरे को अपने जीवन में शामिल करना', भारतीय संस्कृति प्राचीन समय से नहीं बदली, बल्कि बदले हम हैं । अंततः भारत सहित सम्पूर्ण विश्व का कल्याण एवं विश्व शांति सर्वोदय द्वारा ही संभव है ।

महात्मा गाँधी के विचारों के संदर्भ में भारतीय सामाजिक विज्ञान की सीमाओं संभावनाओं तथा अवसरों की समीक्षा

राजेंद्र कुमार चतुर्वेदी
एम एड प्रथम वर्ष
आई ए एस ई बिलासपुर

2 अक्टूबर सन् 1869 को पोरबंदर काठियावाड़, गुजरात में जन्में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी (बापू) लंदन से शिक्षा प्राप्त, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ही सत्याग्रह, अहिंसा, शांति रुपी शस्त्र द्वारा भारतीय समाज को नई दिशा दिखाई थी। परम्परागत भारतीय पोषाक धोती एवं सूत से बनी शाल पहनी जिसे वे स्वयं चरखे पर सूत कातकर अपने हाथों बनाते थे। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्म शुध्दि के लिए लम्बे-लम्बे उपवास रखे। उनके तीनों हथियार अहिंसा-सत्याग्रह-असहयोग के द्वारा उन्होने सामाजिक न्याय के लिए कार्य किया था। पीड़ितों-पिछडों की चिन्ता एवं न्याय तथा श्रमिकों की स्थिति भी जो उस वक्त दयनीय थी, सुधारने का प्रयास किया, समाज में सभी वर्गों के आवश्यकताओं के अनुरुप सांस्कृतिक, सामाजिक बदलाव, समयानुसार नैतिक गुणों में विश्वास, स्वतंत्र एवं उच्च गुणवत्ता पूर्ण जीवन के प्रयास वह भी अच्छे साध्यों की सहायता से साधनों की प्राप्ति का प्रयास अधि ानव व भेदभाव की संकीर्णता को मिटानें वाला था।

समाज में व्याप्त अंदरुनी क्लेश, पिछड़े वर्गों के प्रति प्रेम व समतामूलक समाज के उत्थान हेतू समर्पित प्रयास किया था अस्पृश्यता निवारण, मद्य निषेध विदेशी शासकों से आजादी हेतु बैरिस्टर होते हुए भी सूट-बूट त्याग कर अपनी आवश्यकताओं को सीमितकर गरीबी से राहत दिलाने महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धर्मिक एवं जाती एकता का निर्माण एवं आत्मनिर्भरता के लिए अनेकों कार्यक्रम चलाए। हालंकि इन सबमें स्वराज की प्राप्ति ही प्रमुख लक्ष्य था। अंग्रेजी सरकार के विरुध्द नमक कानून का विरोध एवं भारत छोड़ो आंदोलन से भारतीय जनमानस में उनहोने अपना घर बना लिया था। दक्षिण आफ्रीका एवं भारतीय जेलों में कई वर्षों तक उन्हें रहना पड़ा था। हर परिस्थिति में अहिंसा एवं सत्य का पालन किया और सभी को इसका पालन करने अनुरोध किया।

GANDHIJI AND COTTAGE INDUSTRY

Dr. Namita Sharma
Assistant Professor

Omprakash Ratnakar
Research Scholar

Pappu Suryavanshi
Research Scholar

Dept. of Economics
Guru Ghasidas Vishwavidyalaya Bilaspur

Gandhiji was the great philosopher of India who had played major role for establishing Indian socio-economic structure. Gandhijis' economic ideas are understand in his whole philosophy. Gandhi's economic views were simple and straight forward which would make India economically self sufficient, manufacturing and satisfying its own needs in domestic market, home grown ways. However, he was not an economist but he has given economic vision, if implemented, it would have relieved India from many socio-economic problems. He mostly emphasized on the small scale industries and also adopted principle of "swadeshi". He presented a very useful model for rural economic development in India. He encouraged cottage and village industries to improve the condition of rural economy. Gandhi was not in favor of large scale

industrialization, as it was responsible for many socio-economic evil. He was in favor of decentralized economy. Gandhi desired for every villagers have their own occupation to acquire the motive of self sufficient village to live independent and peaceful life. He emphasized on cottage industry because it use local resources, less investment and they use their own equipments to produce local requirements. Economic decentralization is one of his proposal to develop Indian society with the help of cottage industries. He emphasized rural development which was directly related to cottage industries which have labour intensive. He believed in the alignment of cottage industries which is the only the right way to solve the shortage of raw material and develop cottage industries to fulfill the needs rural areas. Therefore, the main focus of this paper is analyzing the role of small and cottage industries in rural economy from the Gandhian economic perspective.

Keywords:- Gandhiji, Cottage Industry, Rural Economy, Swadeshi, Socio-economic problems

वर्तमान परिदृश्य में गाँधीवादी शिक्षा दर्शन की उपादेयता

डॉ. अमित कुमार पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

महात्मा गांधी का व्यक्तित्व और कृतित्व यथार्थतः आदर्शवादी रहा है किन्तु आचरण की दृष्टि से वे प्रयोजनवादी विचारधारा से ओतप्रोत थे । संसार के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं। पर उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक मत्वपूर्ण योगदान होता है।

अतः गांधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूलमंत्र था - 'शोषण-विहीन समाज की स्थापना करना'। उसके लिए सभी को शिक्षित होना चाहिए। क्योंकि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। अतः गांधीजी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवं सिद्धांतों की व्याख्या की तथा प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षादर्शन का मूर्त रूप है। अतएव उनका शिक्षादर्शन उनको एक शिक्षाशास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका शिक्षा के प्रति जो योगदान था वह अद्‌वितीय था। शिक्षा उन्हें स्वावलंबी बनाये और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

जीवन-दर्शन और शिक्षा-दर्शन वस्तुतः एक-दूसरे के पूरक हैं और एक-दूसरे को प्रभावित भी करते हैं। जीवन-दर्शन की दृष्टि से प्राचीन भारतीय दर्शन के विभिन्न कालों के बीच गहरी रेखायें नहीं खींची जा सकती हैं। प्राचीन भारत की संस्कृति शाश्वत और सतत् रही है, अविभाज्य रही है। विद्वानों ने वैदिक संस्कृति से महाकाव्य (रामायण और महाभारत) कालीन संस्कृति में प्राथक्य स्थापित करने के प्रयत्न किये हैं; किन्तु बाद वाले काल में भी वैदिक संस्कृति और जीवन शैली का स्पष्ट प्रभाव है; साम्य भी है। वैदिक जीवन शैली महाकाव्यकालीन जीवन शैली में प्राचुर्य है। यह सत्य है कि रामायण और महाभारत में वर्णित कुछ जीवन पद्धतियाँ वैदिक काल में नहीं हैं। अतः वेदकालीन जीवन-दर्शन का अस्तित्व पृथक से स्वीकार किया जा सकता है। इसी तारतम्य में यदि हम महाकाव्यकालीन युग का पृथक अस्तित्व भी स्वीकार करते हैं तब भी वैदिक संस्कारों का युग में भी विद्यमान होना स्वीकार करना ही होगा।

GANDHIAN PRINCIPLES ON EDUCATION

Dr.Pushkar Dubey
Head, Department of Management
Dr. Deepak Pandey
ICSSR- Post Doctoral Fellow
Pt. Sundarlal Sharma (Open) University Chhattisgarh, Bilaspur

Mahatma Gandhi had a holisticconcept of human developmentcontributing to national growthand development and believed inthe idea of character building, skilling and man making. Theconcept of trusteeship hebelieved would pave the way toconstruct small, self-reliantcommunities with its ideal citizensbeing all industrious, self-respecting and generousindividuals living in a small co-operatives and community. Hewished that skills and some localcraft should be made as mediumof education for children so thatthey develop their mind, body andsoul in a harmonious way andalso meet the needs of theirfuture life. These Gandhianprecepts and educationalthoughts are relevant fordevelopment and providingsolutions of the current problemslike unemployment, poverty,corruption delinquency,criminality and many others.No wonder Mahatma Gandhi'sviews on a classless society andon the 'primacy of reason overreligions' through education haveinspired and invigorated nationaldecisions and outcomes oneducational policy and practice.possible if only society willingly acceptsSatya and Ahimsa as the means oftransformation of both the individual andsociety. The present article deals with presenting the ways and means of inculcating Gandhian principles in life of individuals and groups. The articulation will guide the future endeavour of human kind for novel peace and justice.

Keywords: Peace, Justice, Education,

गाँधी जी का ग्राम स्वराज

डॉ. ऋषीराज पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, इतिहास,
शास. गजानंद अग्रवाल, स्नातकोत्तर महा., भाटापारा (छ.ग.)

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी का विचार था कि गाँव नष्ट हो गये है तो हिन्दुस्तान नष्ट हो जायेगा। यही कारण है कि वे गाँव के स्वालंबन पर बल देते थे उन्हें लगता था कि शहरें कहीं गाँव को निगल ना जाये। वे यह मानते थे कि शहर विदेशी आधिपत्य का प्रतिफल है। शहर गाँव की सारी दौलते खीच लेते है। गाँधी जी के ग्रामस्वराज के स्वप्ने को पूरा करने के लिये ही पंचायती राज व्यवस्था देश में लागू की गई। गाँधी यह चाहते थे कि गाँव आत्म निर्भर हो स्वयं के उपभोग के लिए स्वयं का उत्पादन, शिक्षा और आर्थिक संपन्नता इससे भी आगे बढ़कर वे ग्राम की सत्ता ग्रामीणों के हाथ में सौपे जाने के पक्षधर थे। वे सच्चे अर्थो में ग्रामीण स्वालंबन के पक्षधर थे। गाँधी जी कल्पना के ग्राम स्वराज में आर्थिक व्यवस्था ही आदर्श नहीं थी, अपितु सामाजिक अवस्था भी आदर्श थी। अतः वे सामाजिक बुराईयाँ यथा, अपृश्यता एवं मद्यपान के प्रबल विरोध में थे। गाँधी के ग्राम स्वराज कार्यक्रम में चरखा व करघा, ग्रामीण कुटीर उद्योग, सहकारी खेती, ग्राम पंचायतें व सहकारी संस्थाएं, राजनैतिक एवं आर्थिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण, अपृश्यता निवारण, मद्यनिषेध एवं बुनियादी शिक्षा प्रमुख थे।

गाँधी जी के अनुसार शाला वातावरण

डॉ.बीना सिंह
(विभागाध्यक्ष) शिक्षा विभाग

अंजु त्रिपाठी
शोधार्थी (शिक्षा विभाग)

साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न आरम्भ यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष तथा स्त्री को शिक्षित किया जा सकता है उनके अनुसार शरीर, हृदय मन तथा आत्मा के समुचित विकास से बालक को पूर्ण मानव बनाया जा सकता है।

गाँधी जी के अनुसार विद्यालय में शिक्षा का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो जीवन के तात्कालिक उद्देश्यों को पूरा करती हो इसलिए उन्होने बेसिक शिक्षा योजना का निर्माण किया यह शिक्षा पाठ्यक्रम क्रिया प्रधान है इसका उद्देश्य बालक को कार्य, योग एवं खोज के द्वारा उसकी शरीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करवह आत्मनिर्भर रहते हुए समाज का उपयोगी अंग बन जाये। उनके अनुसार बालक को शाला में 7 से 14 वर्ष तक निःशुल्क शिक्षा देनी चाहिए जिसका माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए शिक्षा का आधार वही होना चाहिए जो व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला, कम खर्च एवं सरल हो जो स्थानीय आवश्यकताओं एवं भौगोलिक स्थितियों के अनुकुल हो एवं जो व्यक्ति की वास्तविक उद्देश्यों को पूरा करती है अतः गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व का निर्माण हो एवं सत्य, अहिंसा, निर्भयता एवं सत्याग्रह की राह पर चलते हुए अपने शैक्षिक उद्देश्यों की पूर्ती करे।

महात्मा गाँधी और विवेकशील बुद्धि

दिव्या सिंह
शोधार्थी
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर

सत्य और अहिंसा गाँधी जी का मूलमंत्र था। अहिंसा से गाँधी जी का तात्पर्य मन वचन और कर्म से किसी को हानि या दुख न पहुंचाना। क्रोध अहिंसा के मार्ग में बाधा उत्पन्न करने वाले विकारों में से एक है। गाँधी जी का मानना था कि क्रोध एक प्रकार की उतावलेपन (मानसिक अस्थिरता) की अवस्था है जो व्यक्ति को विवेकहीन बना देता है। विवेक हीनता के विपरीत विवेक शील बुदधि वह योग्यता है जो सत्य को असत्य से दूर करने में सक्षम हों और जिससे ज्ञान संभव हो सके। दुनिया को बदलने के लिए जनता को जोड़ने और प्रेरित करने की गाँधी जी योग्यता अस्वाभाविक थी। उन्होने लोगों को समझा साथ ही ताकत की तुलना में प्यार के माध्यम से किसी लक्ष्य तक पंहुचने के बीच के अंतर को प्रतिष्ठित किया। ये उनकी विवेक शील बुदधि का परिचायक है। गाँधी जी के जीवन पर्यंत किए गए कार्यों (सविनय अवज्ञा असहयोग भारत छोड़ो आंदोलन) कार्यों के परिणामों के आधार पर उनके विवेक शीलता को समझा जा सकता है।

गाँधी जी एवं दलित उद्धार

डॉ. प्रतिभा शर्मा
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान,
वी.वाय.टी. शास.स्नातकोत्तर महा. दुर्ग

सुश्री ललीता साहू
सहायक प्राध्यापक, मनोविज्ञान,
माता शबरी शास. कन्या महा., बिलासपुर

प्राचीन भारत में कोई उल्लेख नहीं मिलता किन्तु समय के प्रवाह के बाद वर्ण व्यवस्था के विकृत होने जाने और जाति भेद उत्पन्न होने के चलते अपृश्यता का उदय हुआ। इसके पीछे अनेक ऐतिहासिक राजनैनितक कारण रहे। यह एक सामाजिक बुराई के रूप में प्रकट हुआ। अनेक समाज सुधारकों ने इसे मिटाने के प्रयत्न किये जिसमें गाँधी जी ने जोरदार प्रयत्न किया है। गाँधी जी अपृश्यता को हिन्दु धर्म पर मांथे पर लगा हुआ कलंक का टीका मानते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति के मार्ग का बाधा समझते थे। अतः उनहोने अपने रचनात्मक कार्यक्रमों में अपृश्यता निर्वारण को प्रमुख स्थान दिया। गाँधी ने अपृश्य जाति के लोगों को हरिजन नाम दिया तथा दलित उद्धार के लिये अनेकानेक प्रयत्न किये। उन्होंने 1932 में हरिजन सेवक संघ की स्थापना की, हरिजन बंधु नामक अखबार भी निकाला। अम्बेडर और गाँधी जी के बीच प्रश्नोत्तर के माध्यम से यह विश्वास दिया गया कि हरिजन हिन्दू समाज के अविाभाज्य अंग है। अपृश्यता निवारण के लिए पूरे भारत का दौरा किया लाखों लोगों ने गाँधी के विचारों को सुना और छुआछुत को छोड़कर हरिजनों को लगे लगाया।

गाँधी जी का शिक्षा दर्शन

डॉ. (श्रीमती) संतोष अग्रवाल
प्राचार्य, बी. एम. कालेज, दुर्ग, (छ.ग.)

डॉ. (श्रीमती) सरोज बघेल
प्राचार्य, डी.ए.व्ही. मॉडल कालेज आफ एजुकेशन, दुर्ग

गाँधी जी सामाजिक उद्धार के लिए शिक्षा को महत्वपूर्ण साधन के रुप में देखते थे। वे शोषण विहीन समाज की स्थापना का स्वप्न देखा करते थे, इसके लिए वह चाहते थे कि सभी शिक्षित हो। शिक्षा के बगैर एक सभ्य समाज का निर्माण असंभव है। गाँधी जी भारतीय शिक्षा को "द ब्यूटीफुल ट्री" कहते थे। इसका कारण यह था कि गाँधी जी ने भारत की शिक्षा के बारे में जो कुछ पढ़ा था उसके अनुसार भारत की शिक्षा सरकारों के बजाय समाज के अधीन थी। उन्होंने बुनियादी शिक्षा पर जोर दिया। सन् 1897 में वर्धा के अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा आंदोलन में उन्होंने बेसिक शिक्षा की योजना प्रस्तुत की, जो कि मैट्रिक स्तर तक अंग्रजी रहित तथा उद्योगों पर आधारित रही इस प्रकार उन्होंने नई तालिम (बुनियादी शिक्षा) की योजना डॉ. जाकीर हुसैन की अध्यक्षता में तैयार की, जो कि वर्धा शिक्षा योजना के नाम से प्रसिद्ध हुआ और बुनियादी शिक्षा का आधार है। बुनियादी शिक्षा में कृषि, कढ़ाई-बुनाई, लकड़ी, चमड़े, मिट्टी का समान, मत्स्य पालन, बागवानी, गृह विज्ञान, मातृभाषा, गणित, सामाजिक अध्ययन, सामान्य विज्ञान, कला, हिन्दी, शारीरिक शिक्षा आदि सम्मिलित थे। उन्होंने व्यवहारिक शिक्षा पर बल दिया। गाँधी की शिक्षा दर्शन वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रसांगिक है।

Swadeshi and Social Boycott

Archana Kerketta Madan Kumar Jha
BTC College of agriculture and research station Bilaspur (C.G.)

The social boycott was an outcome of economic Swadeshi Movement. It was preached to go against the repressive measures of the Government. The social boycott was a very powerful weapon. A man selling or buying foreign goods or in any way opposing Swadeshi Movement and helping Government in putting it down would be subjected to various degrees of humiliation. Such social ostracism would make a man quite unhappy, sometimes even very miserable and the Government could do very little to help him in his distress. But such non-violent ostracismwas not the only form of persecution. Sometimes, the 'renegade' would suffer material loss and bodily or mental pain.

Keywords: Swadeshi, Social Boycott and Renegade

गाँधी जी और उनके आर्थि विचार कुटीर उद्योग के विशेष परिप्रेक्ष्य में

अमर नारायण वर्मा
शोधार्थी इतिहास
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ग्राम समाज के प्रबल पक्षधरथे वेग्राम स्वायत्तताऔर कुटीर उद्योगों के विकास के हिमायती थे । गांधीजी का सुझाव था कि गांव के लोगों को रोजगारहेतु शहर की ओर पलायन न करना पड़ेअपितु गांव में ही कुटीर उद्योगों का विकास किया जाए। गांधीजी आर्थिक समानता के पक्षधर थे, उनका विचार था कि कुटीर उद्योगों को मशीनों से निर्मित वस्तुओं के विरुद्ध संरक्षण प्रदान किया जाएक्योंकि गांधीजी मशीनों के अत्यधिकचलन को अनिष्टकारी रूप में देख रहे थे । 1909 में लिखित अपनी पुस्तक" हिंद स्वराज" में उन्होंने मशीनीकरण के इस भयावह रूप की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट कर चेतावनी दी थी कि "मशीनें यूरोप को उजाड़ने लगी है, और वहां की हवा अब भारत में चल रही है ।' लेकिन गांधीजी उस सीमा तक मशीनों के प्रयोग को अनुमति देते थे, जहां वे समाज के हित में बाधक न बने ।

गांधी जी कहते थे कि भारत गांवों में बसता है और कुटीर उद्योग ऐसा उद्योग है, जो लाखों बेरोजगार ग्रामीणों को रोजगार दे सकता है । इस हेतु गांधीजी ने स्वदेशीकरण, ग्राम-स्वालंबन , कुटीर उद्योग, खादी ग्राम उद्योग, हथकरघा उद्योग को बढ़ावा देने पर बल दिया था । आजादी के उपरांत भारत सरकार ने गांधीवादी विचारों को भारतीय संविधान में शामिल करके अनेक जनकल्याणकारी योजनाएं जैसे, ग्रामस्वायत्ता (अनुच्छेद 40) आधुनिक कृषि एवं पशुपालन (अनुच्छेद 48) को लागू किए हैं । गांधीजी के सपनों को साकार करने हेतु 2014 से 'सांसदआदर्श ग्राम' योजना भी संचालित है जो गांव के निर्माण और विकास हेतु महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। निष्कर्ष: गांधीजी का अर्थ-दर्शन और सिद्धांत वर्तमान परिपेक्ष में भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने सन 1920-40 के दशक में थे।

गँधी जी का शिक्षा दर्शन

डॉ. एस. एल. निराला
प्राचार्य, शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महा., बिलासपुर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शवादी रहा है। महात्मा गाँधी ने शिक्षा को परिभाषित करते हुए कहा कि शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक तथा मनुश्य में निहिति शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठतम शक्तियों का अधिकमत विकास है। वे प्रयोजनावादी विचारधारा के समर्थक थे। संसार के अधिकांश लोग उन्हे महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रुप में जानते है पर उनका मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण होता है।

महात्मा गाँधी जी का शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान रहा है। उनके अनुसार सभी को शिक्षित होना चाहिये क्यों कि शिक्षा के अभाव में एक स्वस्थ्य समाज का निर्माण असंम्भव है। उनका शिक्षा दर्शन उन्हें शिक्षाशास्त्री के रुप में समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनके शिक्षा दर्शन सिद्वांत में शिक्षा का अर्थ बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुमुखी विकास करना है। गाँधी जी ने आधारभूत शिक्षा प्रणाली में जोर दिया था इस आधारभूत बुनियादी शिक्षा की नयी योजना वर्धा शिक्षा सम्मेलन में प्रस्तुत की थी जो मेट्रिक स्तर पर अंग्रेजी रहीत और उद्योग पर आधारित थी यही वर्धा शिक्षा योजना बुनियादी शिक्षा का आधार है। चूंकि बुनियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, संस्कृति के नजदीक थी साथ ही साथ सामुदायिक जीवन के आधारभूत व्यवसायों से जुड़ी थी। सीखे हुए आधारभूत शिल्प द्वारा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह कर सकता था अतः यह शिक्षा बुनियादी शिक्षा कहलायी।

गाँधी जी ऐसी शिक्षा पद्धति चाहते थे जो भारत की राष्ट्रीय, सांस्कृतिक पहचान को कायम रखें। गाँधी जी की शिक्षा संबंधी विचारधारा की प्रसंगिकता वर्तमान परिपेक्ष्य में मूल्यांकित की जाय तो हम इस तथ्य पर पहुचते है कि गाँधी जी का शिक्षा दर्शन वर्तमान परिपेक्ष्य में भी प्रासंगिक है।

गाँधी जी के अहिंसा दर्शन की प्रासंगिकता

देवचरण गवास्कर
पी-ए..डी. शोधार्थी इतिहास
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग

महात्मा गांधी अहिंसा के परिचायक थे उन्होने जीवन में ऐसे अनेकों कार्य किये हैं जिनसे हमें शिक्षा मिलती है। वे आजादी के पुरोधा, एक महान व्यक्तित्व के गुणों के समावेश, सरलता, दयालुता व उदारता के प्रतीक थे। सत्य एवं अहिंसा के पक्षधर महात्मा गांधी आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थ। वे सत्य व अहिंसा के प्रणेता थे जिन्होने शस्त्र उठाये बगैर ही अंग्रेजों को घुटने टेकने पर विवश कर दिया था। उन्होने देश के समग्र विकास, मानव को स्वावलम्बी बनाने एवं सशक्त देश के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। गांधी जी ने सत्य को ईश्वर स्वीकार कर उम्र भर सत्य की बुनियाद पर हर असंभव कार्य को संभव बनाने का दृढ़ संकल्प लिया। अहिंसा का तात्पर्य है कि किसी को मन–वचन, कर्म, एवं वाणी से बिना तकलीफ पँहुचाये, ईर्ष्या–द्वेष, झूठ, अपशब्द वाणी का प्रयोग किये बिना तटस्थता प्राप्त करना। उन्होने एक महान और विकसित भारत देश के निर्माण के स्वप्न को पूर्ण किया था। समस्त देशवासियों को एकता में बाँधने का कार्य सत्य एवं अहिंसा के साधन से ही संभव हो पाया वे राजनैतिक क्षेत्र पर अहिंसा का प्रयोग करने वाले प्रथम व्यक्ति थे जिन्होने स्वतंत्र लोकतंत्र की स्थापना की। विज्ञान का यद्ध वह क्षेत्र है, जो किसी भी व्यक्ति को केवल तानाशाही की ओर पँहुचाता है परंतु अहिंसा का विज्ञान ही व्यक्ति को शुद्ध लोकतंत्र के मार्ग की ओर लेकर जाता है। अहिंसात्मक कार्य को उन्होने अपना कर्तव्य समझकर विभिन्न समुदायों को एकजुट कर, शांति का प्रसार कर स्वतंत्र भारत का निर्माण किया।

गाँधी जी और सशक्तीकरण

श्रुतिदेव गवास्कर
पी-ए..डी. शोधार्थी इतिहास
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय, दुर्ग

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में महात्मा गांधी का अतुलनीय योगदान है उन्होने स्वतंत्र भारत में हर तरह से भेदभाव से मुक्त समाज का निर्माण करने हेतु अनेकों प्रयास किये। विशेषकर महिलाओं के उत्थान में, समाज में उचित स्थान एवं सम्मान दिलाने हेतु एवं नारी अधिकारों में हो रहे हनन पर रोक लगाने हेतु भरपूर प्रयास किया। समाजिक कुरीतियों की वजह से स्त्रियाँ कमजोर होने लगी, इन सभी परिस्थितियों को देखकर नारी की दशा में विचार किया एवं नारी उद्धार का प्रयत्न करने लगे ताकि नारी समाज में अपने आप को प्रतिष्ठित एवं अपना खोया सम्मान प्राप्त कर सके। रूढ़िवादिता का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। नारियों को सदैव पुरूषों पर आश्रित बना दिया गया। महात्मा गांधी जी का स्वप्न था कि महिलायें स्वयं आत्मनिर्भर व सशक्त बने उन्हे इस बात का ज्ञान था कि देश में विकास लाने के लिये किन–किन लोगों के भागीदारी की आवश्यकता है गांधी जी स्वतंत्र भारत की कल्पना में प्रत्येक नागरिक को चाहे वह महिला हो या पुरूष, सभी की समान भागीदारी चाहते थे। स्वाधीनता संग्राम के समय समाज में उपस्थित सभी तरह की असमानताओं को दूर करने के लिये जन–मानस को प्रेरित किया। गांधी जी का विचार था कि महिलाओं को कमजोर समझना एक निंदनीय कार्य है। उन्होने नैतिक दृष्टिकोण के आधार पर आकलन किया कि महिलाओं और पुरूषों दोनो को समान दर्जा मिले इसके लिये गांधी जी ने महिलाओं को अपनी शक्ति व आत्मबल को पहचानकर आत्मनिर्भर बनाने के लिये अतुलनीय प्रयास किया। महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में चरखा चलाने के लिये प्रेरित किया एवं आंदोलनकारी कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाने के लिये प्रेरित किया उनके इन्ही प्रयासों के कारण महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। स्वच्छता अभियान में महिलाओं को जागरूक करने एवं जोड़ने का प्रयत्न किया वह जानते थे कि महिलायें स्वस्थ रहकर समाज तथा घर–परिवार को सहयोग करने लगे तो किसी भी प्रकार का बदलाव संभव है।

गाँधी के सामाजिक विचार

रश्मि पाण्डेय
(हिन्दी)
अटल बिहारी बाजपयी विश्वविद्यालय, बिलासपुर

भारत की आजादी की लड़ाई की यह विशेषता रही है कि इस लड़ाई के अग्रणी नेता महात्मा गाँधी ने उस लड़ाई में राजनैतिक आजादी के साथ-साथ सम्पूर्ण सामाजिक समता की स्थापना का लक्ष्य भी सामने रखा था। भारत गुलाम क्यों बना, इसके कारणों की खोज करते हुए उन्होने पाया की जाति भेद, अस्पृष्यता सामाजिक अन्याय, महिलाओं का गौण दर्जा श्रम को नीच समझना आदि अनेक कारण थे जिनसे हमारा समाज कमजोर बना उन सभी कारणों के निराकरण हेतु गॉधी जी ने विभिन्न स्थानात्मक कार्यक्रम आजादी की लड़ाई के साथ-साथ ही चलाए। उन्हीं कार्यक्रमों में से एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, ''अस्पृश्यता निवारण''

महात्मा गाँधी ने अस्पृश्यता-निवारण को आजादी की लड़ाई के साथ जोड़कर आजादी के लिए लड़ने वाले हर व्यक्ति को छुआछुत मिटाने के काम में भी लगाया। इस कार्य को सुचारु रुप से चलाने के लिए उन्होंने 1932 में हरिजन सेवक संघ के साथ जोड़ा। गाँधी जी द्वारा चलाए गए अस्पष्यता निवारण और सामाजिक समता की स्थापना के कार्य के पीछे एक अनोखा दर्शन है। '' प्रायश्चित का''

गॉधी जी और सामाजिक समानता :- गाँधी सामाजिक समानता के प्रवर्तक माने जाते हैं, उनके मतानुसार सभी व्यवसायों की प्रतिष्ठा समान होनी चाहिए उसके शब्दों में ''समाजवाद में समाज के सदस्य समान है न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा।'' गाँधी के समाजवाद में भी ''राजकुमार और कृषक धनी और गरीब उद्योगपति और मजदूर सभी समान स्तर पर है।

अर्थिक समानता :- समानता गाँधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम का एक अंग था। बिना आर्थिक समानता के रचनात्मक कार्यक्रम संभव नही है। गाँधी जी का आचरण उनके सिद्धान्तों के ही अनुरुप उनके शब्दों में ''मुझे इसमें संदेह नही है कि यदि भारत स्वतन्त्रता का महत्वपूर्ण जीवन जीना चाहता है जो संसार के लिए ईर्ष्या की वस्तु है, तो सब मंगी, डॉक्टर वकील, शिक्षक, व्यापारी और अन्य अपने दिनभर के कार्य के लिए एक समान परिश्रमिक प्राप्त करेंगे।'' इसके साथ ही ''प्रत्येक व्यक्ति को संतुलित भोजन एक सुन्दर मकान रहने के लिए बच्चो के लिए शिक्षा की सुविधाए और उचित चिकित्सा प्राप्त होनी चाहिए।''

गॉधीवाद एवं समाजवाद का तुलनात्मक विवेचन करते हुए डॉ. पटटाभी सीतारमैम्या का कथन है ''यदि समाजवाद का उद्देश्य सब व्यक्तियों की समान सुविधाए देना है, तो गाँधीवाद का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को अपने समय और सुविधाओं को उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपयोग करना बताता है।'' यदि समाजवाद अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रत्येक व्यक्ति के अन्तःकरण की उन्नति और संस्कृति के विकास में विश्वास करता है। समाजवाद सब व्यक्तियों को उपदेश देता है लेकिन गॉधीवाद प्रत्येक व्यक्ति को उसका कर्तव्य बताता है विचारों को स्त्रोत कार्ल मार्क्स नही बल्कि उपनिश्द् और गीता रहा है।